

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا							
और नहीं	से (कोई)	चलने वाला	में (पर)	ज़मीन	मगर	पर	अल्लाह
وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلُّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٦﴾							
और वह जानता है	उस का ठिकाना	और उस के सोंपे जाने की जगह	सब कुछ	में	रौशन किताब	6	
وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا وَلَئِنْ قُلْتُمْ أَنْتُمْ مَبْعُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿٧﴾ وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَى أُمَّةٍ مَعْدُودَةٍ لَيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ إِلَّا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٨﴾ وَلَئِنْ أَدْقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ رَحْمَةٍ ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَيَكُفِّرُ ۖ وَلَئِنْ أَدْقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَاءٍ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتِ عَنِّي إِنَّهُ لَفَرِحَ فَخُورٌ ۖ إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١١﴾ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ ۖ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿١٢﴾							
और वही	जो - जिस	पैदा किया	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	में	छ: (6) दिन	और था
उस का अर्थ	पानी पर	ताकि तुम्हें आजमाए	तुम में कौन	बेहतर	अमल में	और अगर	आप कहें
कि तुम	उठाए जाओगे	वाद	मौत - मरना	तो ज़रूर कहेंगे वह	वह लोग जो	उन्होंने न कुफ़ किया	नहीं यह
मगर (सिर्फ)	जादू	खुला	7	और अगर	हम रोक रखें	उन से	अज़ाब तक
गिनी हुई - मुऐयन	तो वह ज़रूर कहेंगे	क्या रोक रही है उसे	याद रखो	जिस दिन	उन पर आएगा	न	टाला जाएगा
उन से	और घेरलेगा	उन्हें	जिस	थे	उस का	मज़ाक उड़ाते	8
इनसान को	अपनी तरफ़ से	कोई रहमत	फिर	हम छीन लें वह	उस से	वेशक वह	अलवत्ता मायूस
और अगर	उसे चखा दें	नमत (आराम)	सख्ती के बाद	उसे पहुँची	तो वह ज़रूर कहेगा	जाती रही	
बुराइयाँ	मुझ से	वेशक वह	इतराने वाला	10	मगर	जिन लोगों ने सब्र किया	
और अमल किए	नेक	यही लोग	उन के लिए	वख़्शिश	और सबाब	बड़ा	11
तो शायद (क्या) तुम	छोड़ दोगे	कुछ हिस्सा	जो	वहि किया गया	तेरी तरफ़	और तंग होगा	उस से
तेरा सीना (दिल)	कि वह कहते हैं	क्यों न	उतरा	उस पर	खज़ाना	या	आया
फ़रिश्ता	इसके सिवा नहीं	कि तुम	डराने वाले	और अल्लाह	पर	हर शै	इख़्तियार रखने वाला
12							

और कोई ज़मीन पर चलने (फिरने) वाला नहीं, मगर उस का रिज़क अल्लाह पर (अल्लाह के ज़िम्मे) है, और वह जानता है उस का ठिकाना और उस के सोंपे जाने की जगह, सब कुछ रौशन किताब (लौहे महफूज़) में है। (6)

और वही है जिस ने पैदा किए आस्मान और ज़मीन छः दिन में, और उस का अर्थ पानी पर था, ताकि तुम्हें वह आजमाए कि तुम में कौन बेहतर है अमल में? और अगर आप (स) कहें कि तुम मरने के बाद उठाए जाओगे तो वह लोग ज़रूर कहेंगे जिन्होंने ने कुफ़ किया कि यह सिर्फ़ खुला जादू है। (7)

और अगर हम उन से अज़ाब रोक रखें एक मुद्दे मुऐयन तक वह ज़रूर कहेंगे क्या चीज़ उसे रोक रही है? याद रखो! जिस दिन उन पर (अज़ाब) आएगा उन से न टाला जाएगा, और उन्हें घेर लेगा जिस का वह मज़ाक उड़ाते थे। (8)

और अगर हम इनसान को अपनी तरफ़ से किसी रहमत का मज़ा चखा दें फिर वह उस से छीन लें, तो वेशक वह मायूस, नाशुक्रा हो जाता है। (9)

और अगर हम उसे सख्ती के बाद आराम चखा दें जो उसे पहुँची हो तो वह ज़रूर कहेगा मुझ से बुराइयाँ जाती रही, वेशक वह इतराने वाला शेखी खोर है। (10)

मगर जिन लोगों ने सब्र किया और नेक अमल किए यही लोग हैं जिन के लिए वख़्शिश और बड़ा सबाब है। (11)

तो क्या तुम छोड़ दोगे (उस का) कुछ हिस्सा जो तुम्हारी तरफ़ वहि किया गया है, और उस से तुम्हारा दिल तंग होगा कि वह कहते हैं कि उस पर क्यों न उतरा कोई खज़ाना या उस के (साथ) फ़रिश्ता (क्यों न) आया? इस के सिवा नहीं कि तुम डराने वाले हो और अल्लाह हर शै पर इख़्तियार रखने वाला है। (12)

क्या वह कहते हैं? कि उस ने इस (कुरआन) को खुद घड़ लिया है, आप (स) कह दें तो तुम भी इस जैसी दस (10) सूरतें घड़ी हुई ले आओ और जिस को तुम (मदद के लिए) बुला सको बुला लो अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। (13)

फिर अगर वह तुम्हारे (उस चैलेंज का) जवाब न दे सकें तो जान लो कि यह तो अल्लाह के इल्म से नाज़िल किया गया है, और यह कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस क्या तुम इस्लाम लाते हो? (14) जो कोई चाहता है दुनिया की जिन्दगी और उस की ज़ीनत, हम उन के लिए उन के अमल इस (दुनिया) में पूरे कर देंगे और उस में उन की कमी न की जाएगी। (15) यही लोग हैं जिन के लिए आखिरत में आग के सिवा कुछ नहीं, और अकारत गया जो इस (दुनिया) में उन्होंने ने किया और जो वह करते थे नाबूद हुए। (16)

पस क्या (यह उस के बराबर है) जो अपने रब के खुले रास्ते पर हो और उस के साथ उस (अल्लाह की तरफ़) से गवाह हो, और उस से पहले मूसा (अ) की किताब इमाम (रहनुमा) और रहमत (थी) यही लोग इस (कुरआन) पर ईमान लाते हैं और गिरोहों में से जो इस का मुन्किर हो तो दोज़ख़ उस का ठिकाना है, पस तू शक में न हो इस से, वेशक वह तेरे रब (की तरफ़) से हक़ है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (17) और कौन है उस से बढ़ कर ज़ालिम? जो अल्लाह पर झूट बान्धे, यह लोग अपने रब के सामने पेश किए जाएंगे और गवाह कहेंगे कि यही हैं जिन्होंने अपने रब पर झूट बोला, याद रखो! ज़ालिमों पर अल्लाह की फटकार है। (18)

जो लोग अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और उस में कज़ी ढूँडते हैं, और वह आखिरत के मुन्किर हैं। (19)

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوْرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرِيَاتٍ

घड़ी हुई	इस जैसी	दस सूरतें	तो तुम ले आओ	आप (स) कहें	उस को खुद घड़ लिया है	क्या वह कहते हैं
----------	---------	-----------	--------------	-------------	-----------------------	------------------

وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٣﴾

13	सच्चे	हो	अगर तुम	अल्लाह	सिवाए	जिस को तुम बुला सको	और तुम बुला लो
----	-------	----	---------	--------	-------	---------------------	----------------

فَالَمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّمَا أُنْزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَنْ لَا إِلَهَ

कोई माबूद नहीं	और यह कि	अल्लाह के इल्म से	नाज़िल किया गया है	कि यह तो	तो जान लो	तुम्हारा	फिर अगर वह जवाब न दे सकें
----------------	----------	-------------------	--------------------	----------	-----------	----------	---------------------------

إِلَّا هُوَ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿١٤﴾ مَن كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا

दुनिया कि जिन्दगी	चाहता है	जो	14	तुम इस्लाम लाते हो	पस क्या	उस के सिवा
-------------------	----------	----	----	--------------------	---------	------------

وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿١٥﴾

15	कमी किए जाएंगे (नुक़सान न होगा)	न	इस में	और वह	इस में	उन के अमल	उन के लिए	हम पूरा कर देंगे	और उस की ज़ीनत
----	---------------------------------	---	--------	-------	--------	-----------	-----------	------------------	----------------

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ وَحَبِطَ مَا

जो	और अकारत गया	आग के सिवा	आखिरत में	उन के लिए	वह जो कि	यही लोग
----	--------------	------------	-----------	-----------	----------	---------

صَنَعُوا فِيهَا وَبِطُلَّ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾ أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ

पर	हो	पस क्या जो	16	वह करते थे	जो	और नाबूद हुए	उस में	उन्होंने ने किया
----	----	------------	----	------------	----	--------------	--------	------------------

بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمَنْ قَبْلِهِ كَتَبَ مُوسَىٰ

मूसा (अ) की किताब	उस से पहले	और	उस से	गवाह	और उस के साथ हो	अपने रब के	खुला रास्ता
-------------------	------------	----	-------	------	-----------------	------------	-------------

إِمَامًا وَرَحْمَةً أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنْ

से	मुन्किर हो इस का	और जो	उस पर	ईमान लाते हैं	यही लोग	और रहमत	इमाम
----	------------------	-------	-------	---------------	---------	---------	------

الْأَحْزَابِ فَاَلْتَارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ إِنَّهُ الْحَقُّ

वेशक वह हक़	उस से	शक में	पस तू न हो	तो आग (दोज़ख़) उस का ठिकाना	गिरोहों में
-------------	-------	--------	------------	-----------------------------	-------------

مِّن رَّبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٧﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ

सब से बड़ा ज़ालिम	और कौन	17	ईमान नहीं लाते	अक्सर लोग	और लेकिन	तेरे रब से
-------------------	--------	----	----------------	-----------	----------	------------

مِّمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ

अपने रब के सामने	पेश किए जाएंगे	यह लोग	झूट	अल्लाह पर	बान्धे	उस से जो
------------------	----------------	--------	-----	-----------	--------	----------

وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا

याद रखो	अपने रब पर	झूट बोला	वह जिन्होंने ने	यही है	गवाह (जमा)	और वह कहेंगे
---------	------------	----------	-----------------	--------	------------	--------------

لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٨﴾ الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ

अल्लाह का रास्ता	से	रोकते हैं	वह लोग जो	18	ज़ालिम (जमा)	पर	अल्लाह की फटकार
------------------	----	-----------	-----------	----	--------------	----	-----------------

وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿١٩﴾

19	मुन्किर (जमा)	वह	आखिरत से	और वह	कज़ी	और उस में ढूँडते हैं
----	---------------	----	----------	-------	------	----------------------

أُولَئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ								
उन के लिए	और नहीं है	ज़मीन में	आजिज़ करने वाले, थकाने वाले	नहीं है	यह लोग			
مِّن دُونِ اللَّهِ مِنْ أُولِيَآءٍ يُضَعْفُ لَهُمُ الْعَذَابُ مَا								
न	अज़ाब	उन के लिए	दुगना	हिमायती	कोई	अल्लाह	सिवा	से
كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ﴿٢٠﴾ أُولَئِكَ الَّذِينَ								
वह जिन्होंने ने	यही लोग	20	वह देखते थे	और न	सुनना	वह ताकत रखते थे		
خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢١﴾ لَا جَرَمَ								
शक नहीं	21	वह इफतिरा करते थे (झूट बान्धते थे)		जो	उन से	और गुम हो गया	अपनी जानों का (अपना)	नुक्सान किया
أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْآخَسِرُونَ ﴿٢٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا								
और उन्होंने ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए		वेशक	22	सब से ज़ियादा नुक्सान उठाने वाले	वह	आखिरत में	कि वह
الصَّالِحَاتِ وَآخَبَتْهُوَ إِلَى رَبِّهِمْ ۖ أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ								
उस में	वह	जन्नत वाले	यही लोग	अपने रब के आगे		और आजिज़ी की	नेक	
فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَى وَالْأَصْمَى								
और देखता	और बहरा	जैसे अन्धा		दोनों फ़रीक़	मिसाल	23	हमेशा रहेंगे	
وَالسَّمِيعِ ۖ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا								
और हम ने भेजा		24	क्या तुम ग़ौर नहीं करते		मिसाल (हालत) में	क्या दोनों बराबर हैं		और सुनता
نُوحًا إِلَى قَوْمِهِ ۖ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾ أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا								
सिवाए	न परसतिश करो तुम	कि	25	खुला	डराने वाला	तुम्हारे लिए	वेशक मैं कौम	उस की तरफ नूह (अ)
اللَّهُ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمِ الْيَمِّ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ الْمَلَأُ								
सरदार	तो बोले	26	दुख देने वाला दिन		अज़ाब	तुम पर	वेशक मैं डरता हूँ	अल्लाह
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا نَرِكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرِكَ								
और हम नहीं देखते तुझे	हमारे अपने जैसा	एक आदमी	मगर	हम तुझे नहीं देखते	उस की कौम के	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)		
اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ								
हम देखते	और नहीं	सरसरी नज़र से		नीच लोग हम में	वह	वह लोग जो	सिवाए	तेरी पैरवी करें
لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ ۖ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾ قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ								
तुम देखो तो	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	27	झूटे	बल्कि हम खयाल करते हैं तुम्हें	फज़ीलत	कोई हम पर	तुम्हारे लिए
إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَيْنِي رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهِ								
अपने पास से		रहमत	और उस ने दी मुझे	अपने रब से		वाज़ह दलील	पर	मैं हूँ अगर
فَعَمِيَتْ عَلَيْكُمْ أُنْزُكُمُوهَا وَأَنْتُمْ لَهَا كُرْهُونَ ﴿٢٨﴾								
28	वेज़ार हो	उस से	और तुम	क्या हम वह तुम्हें ज़बरदस्ती मनवाएँ		तुम्हें	वह दिखाई नहीं देती	

यह लोग ज़मीन में आजिज़ करने वाले नहीं, और उन के लिए नहीं है अल्लाह के सिवा कोई हिमायती, उन के लिए दुगना अज़ाब है, वह न सुनने की ताक़त रखते थे और न वह देखते थे। (20)

यही लोग हैं जिन्होंने ने अपनी जानों का नुक्सान किया और उन से गुम हो गया जो वह झूट बान्धते थे। (21)

कोई शक नहीं कि वह आखिरत में सब से ज़ियादा नुक्सान उठाने वाले हैं। (22)

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, और अपने रब के आगे आजिज़ी की, यही लोग जन्मत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (23)

दोनों फ़रीक़ की मिसाल (ऐसी है) जैसे एक अन्धा और बहरा और (दूसरा) देखता और सुनता है, क्या वह दोनों बराबर हैं हालत में? क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (24)

और हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा कि वेशक मैं तुम्हारे लिए (तुम्हें) डराने वाला हूँ खुला (खोल कर) (25)

कि अल्लाह के सिवा किसी की परसतिश न करो, वेशक मैं तुम पर एक दुख देने वाले दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (26)

तो उस क़ौम के वह सरदार जिन्होंने ने कुफ़ किया, बोले हम तुझे नहीं देखते मगर हमारे अपने जैसा एक आदमी, और हम नहीं देखते कि किसी ने तेरी पैरवी की हो उन के सिवा जो हम में नीच लोग हैं (वह भी) सरसरी नज़र से (वे सोचे समझे) और हम नहीं देखते तुम्हारे लिए अपने ऊपर कोई फज़ीलत, बल्कि हम तुम्हें झूटा खयाल करते हैं। (27)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! देखो तो, अगर मैं वाज़ह दलील पर हूँ अपने रब (की तरफ़) से और उस ने मुझे अपने पास से रहमत दी है, वह तुम्हें दिखाई नहीं देती, तो क्या हम वह तुम्हें ज़बरदस्ती मनवाएँ? और तुम उस से वेज़ार हो। (28)

और ऐ मेरी कौम! मैं तुम से उस पर कुछ माल नहीं मांगता, मेरा अज़र तो सिर्फ़ अल्लाह पर है, और जो ईमान लाए हैं मैं उन्हें हांकने वाला (दूर करने वाला) नहीं, वेशक वह अपने रब से मिलने वाले हैं, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम एक कौम हो कि जहालत करते हो। (29) और ऐ मेरी कौम! अगर मैं उन्हें हांक दूँ तो मुझे अल्लाह से कौन बचा लेगा? क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (30)

और मैं नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब (की बातें) जानता हूँ, और मैं नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूँ, और जिन लोगों को तुम्हारी आँखें हकीर समझती हैं (तुम हकीर समझते हो) मैं नहीं कहता अल्लाह उन्हें हरगिज़ कोई भलाई न देगा, जो कुछ उन के दिलों में है अल्लाह ख़ूब जानता है (अगर ऐसा कहूँ तो) उस वक़्त अलबत्ता मैं ज़ालिमों से होंगा। (31)

वह बोले ऐ नूह (अ)! तू ने हम से झगड़ा किया, सो हम से बहुत झगड़ा किया, पस वह (अज़ाब) ले आ जिस का तू हम से वादा करता है, अगर तू सच्चाओं में से है। (32)

उस ने कहा तुम पर लाएगा सिर्फ़ अल्लाह उस (अज़ाब) को अगर वह चाहेगा, और तुम आजिज़ कर देने वाले नहीं हो। (33)

और मेरी नसीहत तुम्हें नफ़ा न देगी अगर मैं चाहूँ कि मैं तुम्हें नसीहत करूँ जब कि अल्लाह चाहे कि तुम्हें गुमराह करे, वही तुम्हारा रब है, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (34)

क्या वह कहते हैं इस (कुरआन) को बना लाया है? आप (स) कह दें अगर मैं ने इस को बना लिया है तो मुझ पर है मेरा गुनाह, और मैं उस से बरी हूँ जो तुम गुनाह करते हो। (35) और नूह (अ) की तरफ़ वहि की गई कि तेरी कौम से (अब) हरगिज़ कोई ईमान न लाएगा, सिवाए उस के जो ईमान ला चुका, पस तू उस पर ग़मगीन न हो जो वह करते हैं। (36) और तू हमारे सामने कशती बना और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों (के हक़) में मुझ से बात न करना, वेशक वह डूबने वाले हैं। (37)

وَيَقُومُ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا إِنْ أَجَرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا								
और नहीं	अल्लाह पर	मगर	मेरा अजर	नहीं	कुछ माल	इस पर	मैं नहीं मांगता तुम से	और ऐ मेरी कौम
أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّهُمْ مُُلْقُوا رَبِّهِمْ وَلَكِنِّي أَرِكُمْ قَوْمًا								
एक कौम	देखता हूँ तुम्हें	और लेकिन मैं	अपना रब	मिलने वाले	वेशक वह	वह जो ईमान लाए	मैं हांकने वाला	
تَجْهَلُونَ (29) وَيَقُومُ مَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ طَرَدْتُهُمْ								
मैं हांक दूँ उन्हें	अगर	अल्लाह	से	कौन बचाएगा मुझे	और ऐ मेरी कौम	29	जहालत करते हो	
أَفَلَا تَذَكَّرُونَ (30) وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ								
और मैं नहीं जानता	अल्लाह के ख़ज़ाने	मेरे पास	तुम्हें	और मैं नहीं कहता	30	क्या तुम ग़ौर नहीं करते		
الْغَيْبِ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ								
तुम्हारी आँखें	हकीर समझती हैं	उन लोगों को जिन्हें	और मैं नहीं कहता	फ़रिश्ता	कि मैं	और मैं नहीं कहता	ग़ैब	
لَنْ يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ إِنِّي								
वेशक मैं	उन के दिलों में	जो कुछ	ख़ूब जानता है	अल्लाह	कोई भलाई	अल्लाह	हरगिज़ न देगा उन्हें	
إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ (31) قَالُوا يُنُوحُ قَدْ جَادَلْتَنَا فَكُتِرَتْ جِدَالُنَا								
हम से झगड़ा किया	सो बहुत	तू ने झगड़ा किया हम से	ऐ नूह (अ)	वह बोले	31	अलबत्ता ज़ालिमों से	उस वक़्त	
فَاتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ (32) قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيَكُمْ								
सिर्फ़ लाएगा तुम पर	उस ने कहा	32	सच्चे (जमा)	से	अगर तू है	वह जो तू हम से वादा करता है	पस ले आ	
بِهِ اللَّهُ إِنْ شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ (33) وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ								
अगर	मेरी नसीहत	और न नफ़ा देगी तुम्हें	33	आजिज़ कर देने वाले	और तुम नहीं	अगर चाहेगा वह	अल्लाह	उस को
أَرَدْتُ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ								
तुम्हारा रब	वह	कि गुमराह करे तुम्हें	अल्लाह चाहे	है	अगर (जबकि)	तुम्हें	कि मैं नसीहत करूँ	मैं चाहूँ
وَالَيْهِ تُرْجَعُونَ (34) أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ								
अगर मैं ने उसे बना लिया है	कह दें	बना लाया है उस को	वह कहते हैं	क्या	34	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	
فَعَلَيْ إِجْرَامِي وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا تُجْرِمُونَ (35) وَأُوحِيَ إِلَى نُوحٍ								
नूह (अ) की तरफ़	और वहि भेजी गई	35	तुम गुनाह करते हो	उस से जो	बरी	और मैं	मेरा गुनाह	तो मुझ पर
أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ								
पस तू ग़मगीन न हो	ईमान लाचुका	जो	सिवाए	तेरी कौम	से	हरगिज़ ईमान न लाएगा	कि वह	
بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ (36) وَاصْنَعِ الْفُلَكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحَيْنَا								
और हमारे हुक्म से	हमारे सामने	कशती	और तू बना	36	वह करते हैं	उस पर जो		
وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ (37)								
37	डूबने वाले	वेशक वह	जिन लोगों ने जुल्म किया (ज़ालिम)	में	और न बात करना मुझ से			

وَيَصْنَعُ الْفُلَكَ ۚ وَكَلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأَ مِنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ ۚ									
और वह बनाता था	कशती	और जब भी	गुज़रते	उस पर	सरदार	से (के)	उस की कौम	वह हैंसते	उस से (पर)
قَالَ إِنَّ تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ۚ فَسَوْفَ									
उस ने कहा	अगर	तुम हैंसते हो	हम से (पर)	तो वेशक हम	हमेंगे	तुम से (पर)	जैसे	तुम हैंसते हो	38
सो अनकरीब	अनकरीब	38							
تَعْلَمُونَ ۚ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۚ									
तुम जान लोगे	किस पर आता है	ऐसा अज़ाव	उस को रुस्वा करे	और उतरता है	उस पर	उस पर	अज़ाव	दाइमी	39
तुम जान लोगे	39								
حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ ۖ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِنْ									
यहां तक कि	जब आया	हमारा हुक्म	और जोश मारा	तन्नूर	हम ने कहा	चढ़ा ले	उस में	से	
كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ									
हर एक जोड़ा	दो (नर मादा)	और अपने घर वाले	मगर	जो	हो चुका	उस पर	हुक्म		
وَمَنْ أَمِنٌ وَمَا أَمِنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ۚ وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا									
और जो	ईमान लाया	और न	ईमान लाए	उस पर	मगर थोड़े	40	और उस ने कहा	सवार हो जाओ	इस में
और जो	40								
بِسْمِ اللَّهِ مَجَرَّهَا وَمُرْسَهَآ إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ وَهِيَ تَجْرِي									
अल्लाह के नाम से	उस का चलना	उस का ठहरना	और उसका ठहरना	वेशक	मेरा रव	अलबत्ता बख़शने वाला	निहायत मेहरवान	41	और वह
और वह	41								
بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۚ وَنَادَىٰ نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ									
उन को ले कर	लहरों में	पहाड़ जैसी	और पुकारा	नूह (अ)	अपना बेटा	और था	किनारे में		
يُبْنَىٰ اِرْكَبْ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكَافِرِينَ ۚ قَالَ سَاوِي									
ऐ मेरे बेटे	सवार हो जा	हमारे साथ	और न रहो	काफ़िरों के साथ	42	उस ने कहा	मैं जल्द पनाह ले लेता हूँ		
ऐ मेरे बेटे	42								
إِلَىٰ جَبَلٍ يَعْصِمُنِي مِنَ الْمَاءِ ۚ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ									
किसी पहाड़ की तरफ़	वह बचा लेगा मुझे	पानी से	उस ने कहा	कोई बचाने वाला नहीं	आज	से	अल्लाह का हुक्म		
إِلَّا مَنْ رَحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ ۚ									
सिवाए	जिस पर वह रहम करे	और आगई	उन के दरमियान	मौज	तो वह हो गया	से	डूबने वाले	43	
सिवाए	43								
وَقِيلَ يَا رَأْسُ اِبْلَعِي مَاءَكَ وَيَسْمَاءُ أَفْلَعِي وَغِيصَ الْمَاءُ									
और कहा गया	ऐ ज़मीन	निगल ले	अपना पानी	और ऐ आस्मान	थम जा	और खुशक कर दिया गया	पानी		
وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَأَسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِلْقَوْمِ									
और पूरा हो चुका (तमाम हो गया)	काम	और जा लगी	जूदी पहाड़ पर	और कहा दूरी (लानत)	दूरी	लोनों के लिए			
الظَّالِمِينَ ۚ وَنَادَىٰ نُوحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي									
ज़ालिम (जमा)	44	और पुकारा	नूह (अ)	अपना रव	पस उस ने कहा	ऐ मेरे रव	वेशक	मेरा बेटा	
ज़ालिम (जमा)	44								
مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحَكَمِينَ ۚ									
मेरे घर वालों में से	और वेशक	तेरा वादा	सच्चा	और तू	सब से बड़ा हाकिम	हाकिम (जमा)	45		
मेरे घर वालों में से	45								

और वह (नूह अ) कशती बनाता था और जब भी उस की कौम के सरदार उस (के पास) से गुज़रते तो वह उस पर हैंसते, उस (नूह अ) ने कहा अगर तुम हम पर हैंसते हो तो वेशक हम (भी) तुम पर हैंसेंगे जैसे तुम हैंसते हो। (38)

सो अनकरीब तुम जान लोगे किस पर ऐसा अज़ाव आता है जो उस को रुस्वा करे और उतरता है उस पर दाइमी अज़ाव। (39)

यहां तक कि जब हमारा हुक्म आया, और तन्नूर ने जोश मारा (उबल पड़ा) हम ने कहा उस (कशती) में चढ़ा ले हर एक का जोड़ा, नर और मादा, और अपने घर वाले उस के सिवाए जिस पर (गर्कावी का) हुक्म हो चुका है और जो ईमान लाया (उसे भी सवार कर ले) और उस पर ईमान न लाए थे मगर थोड़े। (40)

और उस ने कहा इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से है इस का चलना और इस का ठहरना, वेशक अलबत्ता मेरा रव बख़शने वाला, निहायत मेहरवान है। (41)

और वह (कशती) उन को ले कर पहाड़ जैसी लहरों में चली और नूह (अ) ने अपने बेटे को पुकारा, और वह (उस से) किनारे था, ऐ मेरे बेटे! हमारे साथ सवार हो जा, और काफ़िरों के साथ न रहो। (42)

उस ने कहा मैं किसी पहाड़ की तरफ़ जल्दी पनाह ले लेता हूँ, वह मुझे पानी से बचा लेगा, उस ने कहा आज कोई बचाने वाला नहीं अल्लाह के हुक्म से, सिवाए उस के जिस पर वह रहम करे, और उन के दरमियान मौज आगई (हाइल हो गई) तो वह भी डूबने वालों में (शमिल) हो गया। (43)

और कहा गया ऐ ज़मीन! अपना पानी निगल ले, और ऐ आस्मान थम जा, और पानी को खुशक कर दिया गया, और तमाम हो गया काम, और (कशती) जा लगी जूदी पहाड़ पर, और कहा दूरी (लानत) हो ज़ालिम लोगों के लिए। (44)

और पुकारा नूह (अ) ने अपने रव को, पस उस ने कहा ऐ मेरे रव! वेशक मेरा बेटा मेरे घर वालों में से है, और वेशक तेरा वादा सच्चा है, और तू हाकिमों में सब से बड़ा हाकिम है। (45)

उस ने फरमाया, ऐ नूह (अ)!
 वेशक वह तेरे घर वालों में
 से नहीं, वेशक उस के अमल
 नाशाइस्ता हैं, सो मुझ से ऐसी बात
 का सवाल न कर जिस का तुझे
 इल्म नहीं, वेशक मैं तुझे नसीहत
 करता हूँ कि तू नादानों में से (न)
 हो जाए, (46)
 उस ने कहा ऐ मेरे रब! मैं तेरी
 पनाह चाहता हूँ कि मैं तुझ से
 ऐसी बात का सवाल करूँ जिस का
 मुझे इल्म न हो, और अगर तू मुझे
 न बख़्शे और मुझ पर रहम न करे
 तो मैं नुक़सान पाने वालों में से
 हो जाऊँ। (47)
 कहा गया, ऐ नूह (अ)! हमारी
 तरफ़ से सलामती के साथ उतर
 जाओ और बरकतें हों तुझ पर,
 और उन गिरोहों पर जो तेरे साथ
 हैं और कुछ गिरोह हैं कि हम उन्हें
 जल्द (दुनिया में) फाड़दा देंगे,
 फिर उन्हें हम से पहुँचेगा अज़ाब
 दर्दनाक। (48)
 यह ग़ैब की ख़बरें जो हम तुम्हारी
 तरफ़ वहि करते हैं, न तुम उन
 को जानते थे इस से पहले और न
 तुम्हारी क़ौम (जानती थी), पस
 सब्बर करो, वेशक परहेज़गारों का
 अन्जाम अच्छा है। (49)
 क़ौमे आद की तरफ़ उन के भाई
 हूद (अ) (आए), उस ने कहा
 ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत
 करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई
 माबूद नहीं, तुम सिर्फ़ झूट वान्धते
 हो (इफ़तिरा करते हो) (50)
 ऐ मेरी क़ौम! उस पर मैं तुम से
 कोई सिला नहीं मांगता, मेरा सिला
 सिर्फ़ उसी पर है जिस ने मुझे
 पैदा किया, फिर क्या तुम समझते
 नहीं? (51)
 और ऐ मेरी क़ौम! अपने रब से
 बख़्शिश मांगो, फिर उसी की
 तरफ़ रुज़ूअ करो (तौबा करो),
 वह तुम पर आस्मान से ज़ोर की
 वारिश भेजेगा, और तुम्हें कुव्वत
 पर कुव्वत बढ़ाएगा और मुज़रिम
 हो कर रूग़दानी न करो। (52)
 वह बोले ऐ हूद (अ)! तू हमारे पास
 कोई सनद ले कर नहीं आया, और
 हम छोड़ने वाले नहीं अपने माबूदों
 को तेरे कहने से, और हम तुझ पर
 ईमान लाने वाले नहीं। (53)

قَالَ يٰ نُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ								
उस ने फरमाया	ऐ नूह (अ)	वेशक वह	नहीं	से	तेरे घर वाले	वेशक वह	अमल	नाशाइस्ता
فَلَا تَسْأَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنِّي أَعِظُكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ								
सो मुझ से सवाल न कर	ऐसी बात कि नहीं	तुझ को	उस का	इल्म	वेशक मैं नसीहत करता हूँ तुझे	कि	तू हो जाए	से
الْجَاهِلِينَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي								
नादान (जमा)	46	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	मैं पनाह चाहता हूँ	तुझ से	कि	मैं सवाल करूँ तुझ से	ऐसी बात कि नहीं
بِهِ عِلْمٌ وَلَا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُنْ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٤٧﴾								
उस का	इल्म	और अगर तू न बख़्शे मुझे	और तू मुझ पर रहम न करे	हो जाऊँ	से	नुक़सान पाने वाले	47	मुझे
قِيلَ يٰ نُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ أُمَمٍ								
कहा गया	ऐ नूह (अ)	उतर जाओ तुम	सलामती के साथ	हमारी तरफ़ से	और बरकतें	तुझ पर	और गिरोह पर	
مِمَّنْ مَّعَكَ وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٨﴾								
से - जो	तेरे साथ	और कुछ गिरोह	हम उन्हें जल्द फाड़दा देंगे	फिर	उन्हें पहुँचेगा	हम से	अज़ाब	दर्दनाक
تِلْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا أَنْتَ								
यह	से	ग़ैब की ख़बरें	हम वहि करते हैं उसे	तुम्हारी तरफ़	न	तुम उन को जानते थे	तुम	
وَلَا قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ هَٰذَا فَاصْبِرْ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٩﴾								
और न	तुम्हारी क़ौम	से	इस से पहले	पस सब्बर करो	वेशक	अच्छा अन्जाम	परहेज़गारों के लिए	49
وَإِلَىٰ عَادِ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهِ								
और तरफ़	क़ौमे आद	उन के भाई	हूद (अ)	उस ने कहा	ऐ मेरी क़ौम	तुम इबादत करो	अल्लाह	कोई माबूद नहीं
غَيْرُهُ إِنَّ أَنْتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾ يَقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ								
उस के सिवा	नहीं	तुम	मगर (सिर्फ़)	झूट वान्धते हो	50	ऐ मेरी क़ौम	मैं तुम से नहीं मांगता	उस पर
أَجْرًا إِنِّي أَجْرَىٰ إِلَّا عَلَىٰ الَّذِي فَطَرَنِي أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾								
कोई अजर (सिला)	नहीं	मेरा सिला	मगर (सिर्फ़)	पर	जिस ने मुझे पैदा किया	क्या फिर तुम समझते नहीं	51	
وَيَقَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ								
और ऐ मेरी क़ौम	तुम बख़्शिश मांगो	अपना रब	फिर	उसी की तरफ़ रुज़ूअ करो	वह भेजेगा	आस्मान		
عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا								
तुम पर	ज़ोर की वारिश	और तुम्हें बढ़ाएगा	कुव्वत (पर)	तुम्हारी कुव्वत	और रूग़दानी न करो			
مُجْرِمِينَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا يَهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ								
मुज़रिम हो कर	52	वह बोले	ऐ हूद (अ)	तू नहीं आया हमारे पास	कोई दलील (सनद) ले कर	और नहीं	हम	
بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٥٣﴾								
छोड़ने वाले	अपने माबूद	तेरे कहने से	और नहीं	हम	तेरे लिए (तुझ पर)	ईमान लाने वाले	53	

إِنْ تَقُولُ إِلَّا اعْتَرِكَ بَعْضُ الْهَيْئَةِ بِسُوءٍ قَالَ إِنِّي أَشْهَدُ اللَّهَ									
अल्लाह	गवाह करता हूँ	वेशक मैं	उस ने कहा	बुरी तरह	हमारा माबूद	किसी	तुझे आसेव पहुँचाया है	मगर	हम कहते हैं
وَأَشْهَدُوا أَنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾ مِنْ دُونِهِ فَكِدُونِي جَمِيعًا									
सब	सो मकर (बुरी तदबीर) करो मेरे बारे में	उस के सिवा	54	तुम शरीक करते हो	उन से	वेज़ार हूँ	वेशक मैं	और तुम गवाह रहो	
ثُمَّ لَا تُنْظَرُونَ ﴿٥٥﴾ إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ									
कोई	चलने नहीं	और तुम्हारा रब	मेरा रब	अल्लाह पर	मैं ने भरोसा किया	वेशक मैं	55	मुझे मोहलत न दो	फिर
إِلَّا هُوَ أَخِذْ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾ فَإِنْ									
फिर अगर	56	सीधा	रास्ता	पर	मेरा रब	वेशक	उस को चोटी से	पकड़ने वाला	वह
تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا									
कोई और कौम	मेरा रब	और काइम मुकाम कर देगा	तुम्हारी तरफ़	उस के साथ	जो मुझे भेजा गया	मैं ने तुम्हें पहुँचा दिया	तुम रूगदानी करोगे		
غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا إِنَّ رَبِّي عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِیْظٌ ﴿٥٧﴾									
57	निगहवान	हर शै	पर	मेरा रब	वेशक	कुछ	और तुम न बिगाड़ सकोगे उस का	तुम्हारे सिवा	
وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا									
अपनी	रहमत से	उस के साथ	और वह लोग जो ईमान लाए	हूद (अ)	हम ने बचा लिया	हमारा हुक्म	आया	और जब	
وَنَجَّيْنَاهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ عَادٌ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ									
अपना रब	आयतों का	उन्होंने ने इन्कार किया	आद	और यह	58	सख्त	अज़ाब	से	और हम ने उन्हें बचा लिया
وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٥٩﴾ وَأَتَّبَعُوا فِي									
मैं	और उन के पीछे लगादी गई	59	ज़िददी	हर सरकश	हुक्म	और पैरवी की	अपने रसूल	और उन्होंने ने नाफरमानी की	
هَذِهِ الدُّنْيَا لَعَنَةً وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ إِلَّا إِنْ عَادَا كَفَرُوا رَبَّهُمْ									
अपना रब	वह मुन्किर हुए	आद	वेशक	याद रखो	और रोज़े कियामत	लानत	इस दुनिया		
إِلَّا بُعْدًا لِعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ﴿٦٠﴾ وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا قَالَ يَقُومُ									
ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	सालेह (अ)	उन का भाई	और समूद की तरफ़	60	हूद की कौम	आद के लिए	फटकार	याद रखो
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ هُوَ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ									
ज़मीन से	पैदा किया तुम्हें	वह - उस	उस के सिवा	कोई माबूद	तुम्हारे लिए	नहीं	अल्लाह की इबादत करो		
وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تَوَبُّوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ									
नज़्दीक	मेरा रब	वेशक	रुज़ूअ करो उस की तरफ़ (तौबा करो)	फिर	सो उस से बख्शिश मांगो	उस में	और बसाया तुम्हें उस ने		
مُجِيبٌ ﴿٦١﴾ قَالُوا يَصْلِحْ قَدْ كُنْتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَذَا أَتَنْهَنَّا									
क्या तू हमें मना करता है	इस से कब्ल	मरकज़े उम्मीद	हम में (हमारे दरमियान)	तू था	ऐ सालेह (अ)	वह बोले	61	कुबूल करने वाला	
أَنْ نَعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ مُرِيبٌ ﴿٦٢﴾									
62	कवी शुवाह में	उस की तरफ़	तू हमें बुलाता है	उस से जो	शक में है	और	हमारे बाप दादा	उसे जिस की परस्तिश करते थे	कि हम परस्तिश करें

हम यही कहते हैं कि तुझे आसेव पहुँचाया है हमारे किसी माबूद ने बुरी तरह, उस ने कहा वेशक मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम (भी) गवाह रहो, मैं उन से वेज़ार हूँ जिन को तुम शरीक करते हो (54) उस के सिवा, सो मेरे बारे में सब मकर (बुरी तदबीर) कर लो, फिर मुझे मोहलत न दो। (55) मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया (जो) मेरा रब है और तुम्हारा रब है, कोई चलने (फिरने) वाला नहीं मगर वह उस को चोटी से पकड़ने वाला है (कब्जे में लिए हुए है) वेशक मेरा रब है रास्ते पर सीधे। (56) फिर अगर तुम रूगदानी करोगे तो जिस के साथ मुझे तुम्हारी तरफ़ भेजा गया वह मैं तुम्हें पहुँचा चुका, और काइम मुकाम कर देगा मेरा रब तुम्हारे सिवा किसी और कौम को, और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे, वेशक मेरा रब हर शै पर निगहवान है। (57) और जब हमारा हुक्म आया, हम ने हूद (अ) को और जो लोग उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत से बचा लिया, और हम ने उन्हें बचा लिया सख्त अज़ाब से। (58) और यह आद थे और उन्होंने ने अपने रब की आयतों का इन्कार किया, और अपने रसूलों की नाफरमानी की, और हर सरकश ज़िददी की पैरवी की। (59) और लानत उन के पीछे लगादी गई, इस दुनिया में और रोज़े कियामत, याद रखो! आद अपने रब के मुन्किर हुए, याद रखो! हूद (अ) की कौम आद पर फटकार है। (60) और समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह (अ) को (भेजा), उस ने कहा ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया, और तुम्हें उस में बसाया, पस उस से बख्शिश मांगो, फिर उस से तौबा करो, वेशक मेरा रब नज़्दीक है, कुबूल करने वाला है। (61) वह बोले ऐ सालेह (अ)! तू हमारे दरमियान इस से कब्ल मरकज़े उम्मीद था (तुझ से बड़ी उम्मीदें थी) क्या तू हमें मना करता है कि हम उन की परस्तिश (न) करें जिन की हमारे बाप दादा परस्तिश करते थे, तो जिस की तरफ़ तू हमें बुलाता है उस में हम कवी शुवाह में हैं। (62)

उस ने कहा, ऐ मेरी कौम! तुम क्या देखते हो (भला देखो तो) अगर मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ, और उस ने मुझे अपनी तरफ़ से रहमत दी है तो अगर मैं उस की नाफ़रमानी करूँ, मुझे अल्लाह से कौन बचाएगा? तुम मेरे लिए नुक़सान के सिवा कुछ नहीं बढ़ाते। (63)

और ऐ मेरी कौम! यह अल्लाह की ऊंटनी है, तुम्हारे लिए निशानी, पस उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाती (फिरे) और उस को न छुओ (न पहुँचाओ) कोई बुराई (नुक़सान) पस तुम्हें बहुत जल्द अज़ाब पकड़लेगा। (64)

फिर उन्होंने ने उस की कूँचें काट दी तो उस (सालेह अ) ने कहा, तुम अपने घरों में बरत लो तीन दिन और, यह झूटा न होने वाला वादा है (पूरा हो कर रहेगा)। (65)

फिर जब हमारा हुक्म आया हम ने सालेह (अ) को बचा लिया और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत (के ज़रीए), और उस दिन की रसुवाई से, वेशक तुम्हारा रब क़वी, ग़ालिब है। (66)

और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ पकड़ा, पस उन्होंने ने सुबह की (सुबह के वक़्त) अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (67)

गोया वह कभी यहाँ बसे ही न थे, याद रखो! वेशक कौमे समूद अपने रब के मुन्क़िर हुए, याद रखो! समूद पर फटकार है। (68)

और हमारे फ़रिश्ते अलबत्ता इब्राहीम (अ) के पास खुशख़बरी ले कर आए, वह सलाम बोले, उस (इब्राहीम अ) ने सलाम कहा, फिर उस ने देर न की एक भुना हुआ बछड़ा ले आया। (69)

फिर जब उस (इब्राहीम अ) ने देखा कि उन के हाथ खाने की तरफ़ नहीं पहुँचते तो वह उन से डरा और दिल में उन से खौफ़ महसूस किया, वह बोले डरो मत, वेशक हम कौमे लूत (अ) की तरफ़ भेजे गए हैं। (70)

और उस की बीवी खड़ी हुई थी तो वह हँस पड़ी सो हम ने उसे खुशख़बरी दी इसहाक (अ), और इसहाक (अ) के बाद याकूब (अ) की। (71)

वह बोली अए है! क्या मेरे बच्चा होगा? हालाँकि मैं बुढ़या हूँ और यह मेरा ख़ावन्द बूढ़ा है, वेशक यह एक अजीब बात है। (72)

قَالَ يَقُومُ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَنِىٰ مِنْهُ							
अपनी तरफ़ से	और उस ने मुझे दी	अपने रब से	रौशन दलील पर	अगर मैं हूँ	क्या देखते हो तुम	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा
رَحْمَةً فَمَنْ يَنْصُرُنِى مِنَ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُ ۖ فَمَا تَزِيدُونِى غَيْرَ							
सिवाए	तुम मेरे लिए बढ़ाते	तो नहीं	मैं उस की नाफ़रमानी करूँ	अगर	अल्लाह से	मेरी मदद करेगा (बचाएगा)	तो कौन रहमत
تَخْسِيرٍ ۚ وَيَقُومُ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِى							
मैं	खाए	पस उस को छोड़ दो	निशानी	तुम्हारे लिए	अल्लाह की ऊंटनी	यह	और ऐ मेरी कौम 63 नुक़सान
أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذْكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ۖ							
64	क़रीब (बहुत जल्द)	अज़ाब	पस तुम्हें पकड़ लेगा	बुराई से	और उस को न छुओ तुम	अल्लाह की ज़मीन	
فَعَقَرُوهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوا فِى دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ۖ ذَٰلِكَ وَعَدٌ							
वादा	यह	तीन दिन	अपने घरों में	बरत लो	उस ने कहा	उन्होंने ने उस की कूँचें काट दी	
غَيْرِ مَكْدُوبٍ ۚ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَالِحًا وَٱلَّذِينَ آمَنُوا							
और वह लोग जो ईमान लाए	सालेह (अ)	हम ने बचा लिया	हमारा हुक्म	आया	फिर जब	65	न झूटा होने वाला
مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ ٱلْقَوِىُّ ٱلْعَزِيزُ ۖ							
66	ग़ालिब	क़वी	वह	तुम्हारा रब	वेशक	उस दिन की	और अपनी रहमत से उस के साथ
وَٱخَذَ ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِى دِيَارِهِمْ جِثَمِينَ ۖ							
67	औन्धे पड़े रह गए	अपने घर	में	पस उन्होंने ने सुबह की	चिंघाड़	वह जिन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)	और आ पकड़ा
كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِىهَا ۖ ٱلَا إِنَّ ثَمُودَ كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۖ ٱلَا بُعْدًا							
फटकार	याद रखो	अपने रब के	मुन्क़िर हुए	समूद	वेशक	याद रखो	उस में गोया न बसे थे
لِّثَمُودَ ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِٱلْبَشْرِى قَالُوا سَلَامًا ۖ							
सलाम	वह बोले	खुशख़बरी ले कर	इब्राहीम (अ)	हमारे फ़रिश्ते	और अलबत्ता आए	68	समूद पर
قَالَ سَلَامٌ ۖ فَمَا لَبِثَ أَن جَاءَ بِعَجْلِ حَنِيدٍ ۖ فَلَمَّا رَأَىٰ أَيْدِيَهُمْ							
उस ने देखे उन के हाथ	फिर जब	69	भुना हुआ	एक बछड़ा ले आया	कि	फिर उस ने देर न की	सलाम उस ने कहा
لَّا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكَرَهُمْ وَأَوَّجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ							
तुम डरो मत	वह बोले	खौफ़	उन से	और महसूस किया	वह उन से डरा	उस की तरफ़	नहीं पहुँचते
إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ قَوْمِ لُوطٍ ۖ وَٱمْرَأَتُهُ قَابِئَةُ فَضَحِكًا فَبَشَّرْنَاهَا							
सो हम ने उसे खुशख़बरी दी	तो वह हँस पड़ी	खड़ी हुई	और उस की बीवी	70	कौमे लूत	तरफ़	वेशक हम भेजे गए हैं
بِإِسْحَاقَ ۖ وَمِنْ وَرَآءِ إِسْحَاقَ يَعْقُوبُ ۖ قَالَتْ يُوَيْلَتِى ٱلألد							
क्या मेरे बच्चा होगा	ऐ ख़राबी (अए है)	वह बोली	71	याकूब (अ)	इसहाक (अ)	और से (के) बाद	इसहाक (अ) की
وَٱنَا عَجُوزٌ ۚ وَهَٰذَا بَعْلِى شَيْخًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيبٌ ۖ							
72	अजीब	एक चीज़ (बात)	यह	वेशक	बूढ़ा	मेरा ख़ावन्द	हालाँकि मैं

قَالُوا اتَّعَجِبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ رَحِمَتْ اللَّهُ وَبَرَكَتُهُ عَلَيْكُمْ										वह बोले क्या तू अल्लाह के हुक्म से (अल्लाह की कुदरत पर) तअज्जुब करती है? तुम पर अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें ऐ घर वालो! वेशक वह खूबियों वाला, बुजर्गी वाला है। (73)						
तुम पर	और उस की बरकतें	अल्लाह की रहमत	अल्लाह का हुक्म	से	क्या तू तअज्जुब करती है	वह बोले	खौफ़	इब्राहीम (अ)	से (का)	जाता रहा	फिर जब	73	बुजर्गी वाला	खूबियों वाला	वेशक वह	ऐ घर वालो
أَهْلَ الْبَيْتِ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ﴿٧٣﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ										और उस के पास आगई खुशखबरी हम से झगड़ने लगा। (74)						
खौफ़	इब्राहीम (अ)	से (का)	जाता रहा	फिर जब	73	बुजर्गी वाला	खूबियों वाला	वेशक वह	ऐ घर वालो	وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَى يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٤﴾ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ						
इब्राहीम (अ)	वेशक	74	कौमे लूत	में	हम से झगड़ने लगा	खुशखबरी	और उस के पास आगई	لَحْلِيمٍ أَوْأَهُ مُنِيبٌ ﴿٧٥﴾ يَابِرْهَيْمُ أَعْرِضْ عَنْ هَذَا إِنَّهُ قَدْ جَاءَ								
आचुका	वेशक यह	इस से	ऐराज़ कर	ऐ इब्राहीम (अ)	75	रुजूअ करने वाला	नर्म दिल	बुर्दवार	أَمْرُ رَبِّكَ وَأَنْتَهُمْ أَتَيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ﴿٧٦﴾ وَلَمَّا							
और जब	76	न टलाया जाने वाला	अज़ाव	उन पर आगया	और वेशक उन	तेरे रब का हुक्म	جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سَيِّئًا بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالَ هَذَا									
यह	और बोला	दिल में	उन से	और तंग हुआ	उन से	वह गुमगीन हुआ	लूत (अ) के पास	हमारे फ़रिश्ते	आए	يَوْمَ عَصِيبٍ ﴿٧٧﴾ وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا						
और उस से क़व्ल		उस की तरफ़	दौड़ती हुई	उस की कौम	और उस के पास आई	77	बड़ा सख्ती का दिन	يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ قَالَ يَقَوْمِ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ								
निहायत पाकीज़ा	यह	मेरी बेटियां	यह	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	बुरे काम	वह करते थे	لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ فِي ضَيْفِي أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ								
एक आदमी	तुम से (तुम में)	क्या नहीं	मेरे मेहमानों में	और न रुस्वा करो मुझे	अल्लाह	पस डरो	तुम्हारे लिए	رَّشِيدٌ ﴿٧٨﴾ قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ								
हक़	कोई	तेरी बेटियों में	हमारे लिए	नहीं	तू तो जानता है	वह बोले	78	नेक चलन	وَأَنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ﴿٧٩﴾ قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةٌ							
कोई ज़ोर	तुम पर	मेरे लिए (मेरा)	काश कि	उस ने कहा	79	चाहते हैं?	हम क्या	खूब जानता है	और वेशक तू	أَوْ آوَىٰ إِلَىٰ زُكْنٍ شَدِيدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوا يَلُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ						
तुम्हारा रब	भेजे हुए	वेशक हम	ऐ लूत (अ)	वह बोले	80	मज़बूत पाया	तरफ़	या मैं पनाह लेता	لَنْ يَصِلُوا إِلَيْكَ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ							
और न मुड़ कर देखे	रात	से (का)	कोई हिस्सा	अपने घर वालों के साथ	सो ले निकल	तुम तक	वह हरगिज़ नहीं पहुँचेंगे	مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا أَمْرَاتَكَ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا أَصَابَهُمْ								
उन को पहुँचेगा	जो	उस को पहुँचने वाला	वेशक वह	तुम्हारी बीबी	सिवा	कोई	तुम में से	إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ﴿٨١﴾								
81	नज़दीक	सुबह	क्या नहीं	सुबह	उन का वादा	वेशक	वह हरगिज़ नहीं पहुँचेगा उस को पहुँचने वाला है (पहुँच कर रहेगा), वेशक उन पर (अज़ाव के) वादे का वक़्त सुबह है, क्या सुबह नज़दीक नहीं? (81)									

पस जब हमारा हुक्म आया, हम ने उन का वुलन्द पस्त कर दिया (ज़ेर ज़बर कर दिया) और हम ने बरसाए उस (बस्ती) पर संगरेज़े के पत्थर तह ब तह (लगातार)। (82) तेरे रब के पास निशान किए हुए, और यह नहीं है ज़ालिमों से कुछ दूर। (83)

और मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) (आए), उस ने कहा: ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और माप तोल में कमी न करो, वेशक मैं तुम्हें आसूदा हाल देखता हूँ, और वेशक मैं तुम पर एक घेर लेने वाले दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (84) और ऐ मेरी कौम! इन्साफ़ से माप तोल पूरा करो, लोगों को उन की चीज़ें घटा कर न दो, और ज़मीन में फ़साद करते न फ़िरो। (85)

अल्लाह (का दिया हुआ जो) बच रहे तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम ईमान वाले हो, और मैं तुम पर निगहबान नहीं हूँ। (86) वह बोले ऐ शुऐब (अ)! क्या तेरी नमाज़ तुझे हुक्म देती है (सिखाती है)? कि उन्हें छोड़ दें जिन की हमारे बाप दादा परस्तिश करते थे, या अपने मालों में हम जो चाहें न करें, (ताने भरे अंदाज़ में बोले) वेशक तुम ही बाबिकार, नेक चलन हो? (87)

उस ने कहा ऐ मेरी कौम! तुम्हारा क्या खयाल है? मैं अपने रब की तरफ़ से अगर रौशन दलील पर हूँ और उस ने मुझे अपनी तरफ़ से अच्छी रोज़ी दी है, और मैं नहीं चाहता कि मैं (खुद) उस के खिलाफ़ करूँ जिस से तुम्हें रोकता हूँ, जिस कद्र मुझ से हो सके मैं सिर्फ़ इसलाह चाहता हूँ और मेरी तौफ़ीक़ सिर्फ़ अल्लाह ही से है, उसी पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूँ। (88)

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا

उस पर	और हम ने बरसाए	उस का नीचा (पस्त)	उस का ऊपर (वुलन्द)	हम ने करदिया	हमारा हुक्म	आया	पस जब
-------	----------------	-------------------	--------------------	--------------	-------------	-----	-------

حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مِّنْضُودٍ ﴿٨٢﴾ مُسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ

तेरे रब के पास	निशान किए हुए	82	तह ब तह	कंकर (संगरेज़े)	पत्थर
----------------	---------------	----	---------	-----------------	-------

وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا

शुऐब (अ)	उन का भाई	और मदयन की तरफ़	83	कुछ दूर	ज़ालिम (जमा)	से	यह	और नहीं
----------	-----------	-----------------	----	---------	--------------	----	----	---------

قَالَ يَاقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَهِ غَيْرُهُ

उस के सिवा	कोई माबूद	तुम्हारे लिए नहीं	अल्लाह	इबादत करो	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा
------------	-----------	-------------------	--------	-----------	------------	-----------

وَلَا تَنقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ إِنِّي أَرَبُّكُمْ بِخَيْرٍ وَإِنِّي

और वेशक मैं	आसूदा हाल	तुम्हें देखता हूँ	वेशक मैं	और तोल	माप	और न कमी करो
-------------	-----------	-------------------	----------	--------	-----	--------------

أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُحِيطٍ ﴿٨٤﴾ وَيَقَوْمِ أَوفُوا

पूरा करो	और ऐ मेरी कौम	84	एक घेरलेने वाला दिन	अज़ाब	तुम पर	डरता हूँ
----------	---------------	----	---------------------	-------	--------	----------

الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ

उन की चीज़	लोग	और न घटाओ	इन्साफ़ से	और तोल	माप
------------	-----	-----------	------------	--------	-----

وَلَا تَعَثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾ بَقِيَّتُ اللَّهُ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنِ

अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	अल्लाह	बचा हुआ	85	फ़साद करते हुए	ज़मीन में	और न फ़िरो
-----	--------------	-------	--------	---------	----	----------------	-----------	------------

كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾ قَالُوا يُشْعِبُ

ऐ शुऐब (अ)	वह बोले	86	निगहबान	तुम पर	मैं	और नहीं	ईमान वाले	तुम हो
------------	---------	----	---------	--------	-----	---------	-----------	--------

أَصْلَوْتُكَ تَأْمُرُكَ أَنْ نَتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَنْ نَفْعَلَ

हम न करें	या	हमारे बाप दादा	जो परस्तिश करते थे	हम छोड़ दें	कि	तुझे हुक्म देती है	क्या तेरी नमाज़
-----------	----	----------------	--------------------	-------------	----	--------------------	-----------------

فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾ قَالَ

उस ने कहा	87	नेक चलन	बुर्दवार (बाबिकार)	अलबत्ता तू	वेशक तू	जो हम चाहें	अपने मालों में
-----------	----	---------	--------------------	------------	---------	-------------	----------------

يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَرَزَقْنِي مِنْهُ

अपनी तरफ़ से	उस ने मुझे रोज़ी दी	अपना रब	से	रौशन दलील	पर	मैं हूँ	अगर	क्या तुम देखते हो (क्या खयाल है)	ऐ मेरी कौम
--------------	---------------------	---------	----	-----------	----	---------	-----	----------------------------------	------------

رِزْقًا حَسَنًا وَمَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَا أَنهَكُم

जिस से मैं तुम्हें रोकता हूँ	तरफ़	मैं उस के खिलाफ़ करूँ	कि	और मैं नहीं चाहता	अच्छी	रोज़ी
------------------------------	------	-----------------------	----	-------------------	-------	-------

عَنْهُ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا

और नहीं	मुझ से हो सके	जो (जिस कद्र)	इस्लाह	मगर (सिर्फ़)	मैं चाहता	नहीं	उस से
---------	---------------	---------------	--------	--------------	-----------	------	-------

تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿٨٨﴾

88	मैं रुजूअ करता हूँ	और उसी की तरफ़	मैं ने भरोसा किया	उस पर	अल्लाह से	मगर (सिर्फ़)	मेरी तौफ़ीक़
----	--------------------	----------------	-------------------	-------	-----------	--------------	--------------

قَالَ

وَيَقُومُ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِي أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَ					
जो पहुँचा	उस जैसा	कि तुम्हें पहुँचे	मेरी ज़िद	तुम्हें आमादा न करदे	और ऐ मेरी कौम
قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صَالِحٍ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِّنْكُمْ					
तुम से	कौमे लूत	और नहीं	कौमे सालेह	या	कौमे हूद या कौमे नूह (अ)
بَعِيدٍ ۝۸۹ وَاسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ					
निहायत मेहरबान	मेरा रब	वेशक	उस की तरफ रुजूअ करो	फिर	अपना रब और वख़्शिश मांगो 89 कुछ दूर
وَدُودٌ ۝۹۰ قَالُوا يَشْعِبُ مَا نَفَقَهُ كَثِيرًا مِّمَّا تَقُولُ وَإِنَّا					
और वेशक हम	उन से जो तू कहता है	बहुत	हम नहीं समझते	ऐ शुऐब (अ)	उन्होंने ने कहा 90 मुहब्बत वाला
لَنَزِكَ فِينَا ضَعِيفًا وَلَوْ لَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنَاكَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْنَا					
हम पर	तू	और नहीं	तुझ पर पथराओ करते	और अगर तेरा कुम्बा न होता	जईफ (कमज़ोर) अपने दरमियान तुझे देखते हैं
بَعَزِيزٍ ۝۹۱ قَالَ يَقُومُ أَرْهَطِي أَعَزُّ عَلَيْكَ مِنَ اللَّهِ					
अल्लाह	से	तुम पर	ज़ियादा ज़ोर वाला	क्या मेरा कुम्बा	ऐ मेरी कौम उस ने कहा 91 ग़ालिब
وَاتَّخَذْتُمُوهُ وَرَاءَكُمْ ظَهْرِيًّا إِنَّ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝۹۲					
92	अहाता किए हुए	उसे जो तुम करते हो	मेरा रब	वेशक	पीठ पीछे अपने से परे और तुम ने उसे लिया (डाल रखा)
وَيَقُومُ أَعْمَلُوا عَلَى مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝					
तुम जान लोगे	जल्द	काम करता हूँ	वेशक मैं	अपनी जगह	पर तुम काम करते रही ऐ मेरी कौम
مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ وَارْتَقِبُوا					
और तुम इन्तिज़ार करो	झूटा	वह	और कौन?	उस को रुस्वा कर देगा	अज़ाब उस पर आता है कौन - किस?
إِنِّي مَعَكُمْ رَقِيبٌ ۝۹۳ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا					
शुऐब (अ)	हम ने वचा लिया	हमारा हुकम	और जब आया	93	इन्तिज़ार तुम्हारे साथ मैं वेशक
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَاحْذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ					
कड़क (चिंघाड़)	उन्होंने ने जुल्म किया	वह लोग जो	और आलिया	अपनी से अपनी रहमत से	उस के साथ और जो लोग ईमान लाए
فَاصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جَثِمِينَ ۝۹۴ كَانَ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا أَلَا					
याद रखो	उस में (वाहां)	वह नहीं बसे	गोया	94	औन्धे पड़े हुए अपने घरों में सो सुबह की उन्होंने ने
بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُودُ ۝۹۵ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ					
मूसा (अ)	और हम ने भेजा	95	समूद	जैसे दूर हुए	मदयन के लिए दूरी है
بِأَيِّنَّا وَسلَطْنِ مُبِينٍ ۝۹۶ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ					
और उस के सरदार	फिरज़ौन कि तरफ़	96	रौशन	और दलील	अपनी निशानियों के साथ
فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ۝۹۷					
97	दुरुस्त	फिरज़ौन का हुकम	और न	फिरज़ौन का हुकम	तो उन्होंने ने पैरवी की

और ऐ मेरी कौम! तुम्हें मेरी ज़िद आमादा न कर दे कि तुम्हें (अज़ाब) पहुँचे उस जैसा जो कौमे नूह (अ) या कौमे हूद (अ) या कौमे सालेह (अ) को, और कौमे लूत (अ) नहीं है तुम से कुछ दूर। (89) और अपने रब से वख़्शिश मांगो, फिर उस की तरफ़ रुजूअ करो, वेशक मेरा रब निहायत मेहरबान, मुहब्बत वाला है। (90) उन्होंने ने कहा ऐ शुऐब (अ)! तू जो कहता है उन में से हम बहुत (सी बातें) नहीं समझते और वेशक हम तुझे देखते हैं अपने दरमियान कमज़ोर, और तेरा कुम्बा (भाई बन्द) न होते तो हम तुझ पर पथराओ करते और तू हम पर ग़ालिब नहीं। (91) उस ने कहा ऐ मेरी कौम! क्या मेरा कुम्बा तुम पर अल्लाह से ज़ियादा ज़ोर वाला है? और तुम ने उसे अपनी पीठ पीछे डाल रखा है, वेशक मेरा रब जो तुम करते हो उसे एहाता (काबू) किए हुए है। (92) और ऐ मेरी कौम! तुम अपनी जगह काम करते रही मैं (अपना) काम करता हूँ, तुम जल्द जान लोगे किस पर वह अज़ाब आता है जो उस को रुस्वा कर देगा? और कौन झूटा है? और तुम इन्तिज़ार करो, वेशक मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में हूँ। (93) और जब हमारा हुकम आया, हम ने शुऐब (अ) को और जो लोग उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत से वचा लिया, और जिन लोगों ने जुल्म किया उन्हें चिंघाड़ ने आलिया, सो उन्होंने ने सुबह की (सुबह के वक़्त) अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (94) गोया वह वहां बसे (ही) न थे, याद रखो! (रहमत से) दूरी हो मदयन के लिए जैसे दूर हुए समूद। (95) और हम ने भेजा मूसा (अ) को अपनी निशानियों और रौशन दलील के साथ, (96) फिरज़ौन और उसके सरदारों की तरफ़, तो उन्होंने ने फिरज़ौन के हुकम की पैरवी की और फिरज़ौन का हुकम दुरुस्त न था। (97)

क़ियामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे होगा, तो वह उन्हें दोज़ख़ में ला उतारेगा और बुरा है घाट (उन के) उतरने का मुक़ाम। (98) और इस (दुनिया) में उन के पीछे लानत लगादी गई और क़ियामत के दिन, बुरा है (यह) इन्ज़ाम जो उन्हें दिया गया। (99)

यह बसतियों की ख़बरें हैं कि हम तुझ को बयान करते हैं, उन में कुछ मौजूद हैं और (कुछ की जड़ें) कट चुकी हैं। (100)

और हम ने उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने ने अपनी जानों पर जुल्म किया, सो उन के कुछ काम न आए वह माबूद जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकारते थे, जब तेरे रब का हुक़म आया, और उन्हें हलाकत के सिवा उन्होंने ने कुछ न बढ़ाया। (101)

और ऐसी ही है तेरे रब की पकड़ जब वह बसतियों को पकड़ता है और वह जुल्म करते हों, वेशक उस की पकड़ दर्दनाक, सख़्त है। (102)

वेशक इस में अलवत्ता उस के लिए निशानी है जो डरा आख़िरत के अज़ाब से, यह एक दिन है जिस में सब लोग जमा होंगे, और यह एक दिन है पेश होने (हाज़री) का। (103)

और हम पीछे नहीं हटाते (मुलतवी नहीं करते) मगर (सिर्फ़) एक मुक़र्ररा मुदत तक के लिए। (104)

जब वह दिन आएगा कोई शख्स बात न कर सकेगा, मगर उस की इजाज़त से, सो कोई उन में बदबख़्त है और कोई खुश बख़्त। (105)

पस जो बदबख़्त हुए वह दोज़ख़ में हैं, उन के लिए उस में चीख़ना और दहाड़ना है। (106)

वह उस में हमेशा रहेंगे, जब तक ज़मीन और आस्मान हैं, मगर जितना तेरा रब चाहे, वेशक तेरा रब जो चाहे कर गुज़रने वाला है। (107)

और जो लोग खुश बख़्त हुए सो वह हमेशा जन्नत में रहेंगे, जब तक ज़मीन और आस्मान हैं, मगर जितना तेरा रब चाहे, (यह) बख़्शिश है ख़तम न हाने वाली। (108)

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ وَبِئْسَ						
और बुरा	दोज़ख़	तो ला उतारेगा उन्हें	क़ियामत के दिन	अपनी क़ौम	आगे होगा	
الْوَرْدُ الْمَوْرُودُ (98) وَأَتَّبِعُوا فِي هَذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ بِئْسَ						
बुरा	और क़ियामत के दिन	लानत	इस में	और उन के पीछे लगादी गई	98	घाट (उतरने का मुक़ाम)
الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ (99) ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرَى نَقُصُّهُ عَلَيْكَ مِنْهَا						
उन से	तुझ पर (को)	हम यह बयान करते हैं	बसतियों की ख़बरें	से	यह	99
فَأَيُّمْ وَحْصِيدٌ (100) وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ						
अपनी जानों पर	उन्होंने ने जुल्म किया	और लेकिन (बल्कि)	और हम ने जुल्म नहीं किया उन पर	100	और कट चुकी	क़ाइम (मौजूद)
فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ						
अल्लाह	अलावा	वह पुकारते थे	वह जो	उन के माबूद	उन से (के)	सो न काम आए
مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٌ (101)						
101	सिवाए हलाकत	और न बढ़ाया उन्हें	तेरे रब का हुक़म	आया	जब	कुछ भी
وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَى وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ						
उस की पकड़	वेशक	जुल्म करते हों	और वह	बसतियां	जब उस ने पकड़ा (पकड़ता है)	तेरा रब
الْيَمِّ شَدِيدٌ (102) إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ						
دَلِيلٌ يَوْمَ مَجْمُوعٍ لَهُ النَّاسُ وَذَلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُودٌ (103)						
103	पेश होने का	एक दिन	और यह	सब लोग	उस में	जमा होंगे
وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مُّعَدَّدٍ (104) يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلِّمُ نَفْسٌ إِلَّا						
मगर	कोई शख्स	न बात करेगा	वह आएगा	जिस दिन	104	गिनी हुई (मुक़र्ररा)
بِأَذْنِهِ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَسَعِيدٌ (105) فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فَفِي النَّارِ						
दोज़ख़	सो में	बदबख़्त	जो लोग	पस	105	और कोई खुश बख़्त
لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ (106) خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ						
आस्मान (जमा)	जब तक है	उस में	हमेशा रहेंगे	106	और दहाड़ना	चीख़ना
وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ (107)						
107	जो वह चाहे	कर गुज़रने वाला	तेरा रब	वेशक	तेरा रब	जितना चाहे
وَأَمَّا الَّذِينَ سَعِدُوا فَفِي الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ						
जब तक है	उस में	हमेशा रहेंगे	सो जन्नत में	खुश बख़्त हुए	वह लोग जो	और जो
السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ عَطَاءٌ غَيْرَ مَجْذُودٍ (108)						
108	ख़तम न हाने वाली	अता - बख़्शिश	तेरा रब	जितना चाहे	मगर	और ज़मीन

فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَؤُلَاءِ مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا						
जैसे	मगर	वह नहीं पूजते	यह लोग	पूजते हैं	उस से जो	शक ओ शुबह में
يَعْبُدُ آبَاءَهُمْ مِنْ قَبْلُ وَإِنَّا لَمُوقُّوهُمْ نَصِيبُهُمْ						
उन का हिस्सा	उन्हें पूरा फेर देंगे	और वेशक हम	उस से कबल	उन के बाप दादा	पूजते थे	
غَيْرَ مَنْقُوصٍ ۚ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ						
उस में	सो इख्तिलाफ किया गया	किताब	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने दी	109	घटाए बगैर
وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ وَلَهُمْ لَفِي شَكٍّ						
अलबत्ता शक में	और वेशक वह	उन के दरमियान	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता	तेरा रब	से	पहले हो चुकी
مِنْهُ مُرِيبٌ ۚ وَإِنْ كَلَّا لَمَّا لِيُوفِيْنَهُمْ رَبُّكَ أَعْمَالَهُمْ						
उन के अमल	तेरा रब	उन्हें पूरा बदला देगा	जब	सब	और वेशक	110
إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۚ فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ						
तौबा की	और जो	तुम्हें हुक्म दिया गया	जैसे	सो तुम काइम रहो	111	वाखबर
مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۚ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ وَلَا تَزْكُتُوا إِلَىٰ						
तुम्हारे साथ	और सरकशी न करो	वेशक वह	उस से जो	तुम करते हो	देखने वाला	112
الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ						
कोई	अल्लाह	सिवा	तुम्हारे लिए	और नहीं	आग	पस तुम्हें छुएगी
أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ۚ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَزُلْفًا						
कुछ हिस्सा	दिन	दोनों तरफ	नमाज़	और काइम रखो	113	न मदद दिए जाओगे
مِّنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ۚ ذَلِكَ ذِكْرِي						
से (के)	रात	वेशक	नेकियां	मिटा देती है	बुराइयां	यह
لِلذِّكْرِ ۚ وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۚ						
नसीहत मानने वालों के लिए	114	और सब्र करो	वेशक	अल्लाह	ज़ाया नहीं करता	अजर
فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةَ يَنَّهُونَ عَنْ						
पस क्यों न हुए	से	कौमें	से	तुम से पहले	साहवे खैर	रोकते
الْفُسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ						
फ़साद	ज़मीन में	मगर	थोड़े	से - जो	हम ने बचा लिया	उन से
الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أَتَرَفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ۚ						
वह लोग जो	उन्होंने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	जो उन्हें दी गई	उस में	और वह थे	गुनाहगार	116
وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ۚ						
और नहीं है	तेरा रब	कि हलाक कर दे	बस्तियां	ज़ुल्म से	जब कि वहां के लोग	नेकोकार

पस उस से शक ओ शुबह में न रहो जो यह (काफिर) पूजते हैं, वह नहीं पूजते मगर जैसे उस से कबल उन के बाप दादा पूजते थे, और वेशक हम उन्हें उन का हिस्सा घटाए बगैर पूरा फेर देंगे। (109) और हम ने अलबत्ता मूसा (अ) को किताब दी, सो उस में इख्तिलाफ किया गया, और अगर तेरे रब की तरफ से एक बात पहले न हो चुकी होती तो अलबत्ता उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता, और अलबत्ता वह इस (कुरआन की तरफ) से धोके में डालने वाले शक में हैं। (110) और वेशक जब (वक़्त आएगा) सब को पूरा पूरा बदला देगा तेरा रब उन के आमाल का, वेशक जो वह करते हैं वह उस से वाखबर है। (111) सो तुम काइम रहो जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया है, और वह भी जिस ने तौबा की तुम्हारे साथ, और सरकशी न करो, वेशक जो तुम करते हो वह उस को देख रहा है। (112) और उन की तरफ न झुको जिन्होंने ने जुल्म किया, पस तुम्हें आग छुएगी (आ लगेगी), और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई मददगार नहीं, फिर मदद न दिए जाओगे (मदद न पाओगे)। (113) और नमाज़ काइम रखो दिन के दोनों तरफ (सुबह ओ शाम) और रात के कुछ हिस्से में, वेशक नेकियां मिटा देती हैं बुराइयों को, यह नसीहत है नसीहत मानने वालों के लिए। (114) और सब्र करो, वेशक अल्लाह अजर ज़ाया नहीं करता नेकी करने वालों का। (115) पस तुम से पहले जो कौमें हुई उन में साहबाने खैर क्यों न हुए? कि रोकते ज़मीन में फ़साद से, मगर थोड़े से जिन्हें हम ने उन से बचा लिया और ज़ालिम (उन्हीं लज़्ज़तों के) पीछे पड़े रहे जो उन्हें दी गई थी, और वह गुनाहगार थे। (116) और तेरा रब ऐसा नहीं है कि बस्तियों को जुल्म से हलाक कर दे जबकि वहां के लोग नेकोकार हों। (117)

और अगर तेरा रब चाहता तो लोगों को एक (ही) उम्मत कर देता और वह हमेशा इख्तिलाफ़ करते रहेंगे। (118)

मगर जिस पर तेरे रब ने रहम किया, और उसी लिए उन्हें पैदा किया, और पूरी हुई तेरे रब की बात, अलबत्ता जहन्नम को भर दूंगा जिनों और इन्सानों से इकट्ठे। (119)

और हर बात हम तुम से रसूलों के अहवाल की बयान करते हैं ताकि उस से तुम्हारे दिल को तसल्ली दें, और तुम्हारे पास आया इस में हक़, और मोमिनों के लिए नसीहत और याद दिहानी। (120)

और उन लोगों को कह दें जो ईमान नहीं लाते, तुम अपनी जगह काम किए जाओ, हम (अपनी जगह) काम करते हैं। (121)

और तुम इन्तिज़ार करो, हम भी मुन्तज़िर हैं। (122)

और अल्लाह के पास है आस्मानों और ज़मीन के ग़ैब (छुपी हुई बातें), और उस की तरफ़ तमाम कामों की बाज़ग़शत है, सो उस की इबादत करो, और उस पर भरोसा करो, और तुम्हारा रब उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (123)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरवान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा, यह रौशन किताब की आयतें हैं। (1)

वेशक हम ने उसे कुरआन अरबी ज़बान में नाज़िल किया, ताकि तुम समझो। (2)

हम तुम पर बहुत अच्छा किस्सा बयान करते हैं, इस लिए कि हम ने तुम्हारी तरफ़ यह कुरआन भेजा और तहकीक़ तुम उस से क़व्ल अलबत्ता बेख़बरों में से थे। (3)

(याद करो) जब यूसुफ़ (अ) ने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे बाप! वेशक मैं ने ग़्यारह (11) सितारों और सूरज चाँद को (सपने में) देखा, मैं ने उन्हें अपने लिए सिज्दा करते देखा। (4)

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَا يَزَالُونَ							
और वह हमेशा रहेंगे	एक	उम्मत	लोग (जमा)	तो कर देता	तेरा रब	चाहता	और अगर
مُخْتَلِفِينَ ﴿١١٨﴾ إِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ							
बात	और पूरी हुई	पैदा किया उन्हें	और उसी लिए	तेरा रब	रहम किया	जो - जिस	मगर 118
رَبِّكَ لَا مَلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾ وَكُلًّا							
और हर बात	119	इकट्ठे	और इन्सान	जिन (जमा)	से	जहन्नम	अलबत्ता भर दूंगा
نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاءَكَ							
और तेरे पास आया	तेरा दिल	उस से	कि हम साबित करें (तसल्ली दें)	रसूल (जमा)	ख़बरें (अहवाल)	से	तुझ पर हम बयान करते हैं
فِي هَذِهِ الْحَقِّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ لِلَّذِينَ							
वह लोग जो	और कह दें	120	मोमिनों के लिए	और याद दिहानी	और नसीहत	हक़	इस में
لَا يُؤْمِنُونَ أَعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ ۚ إِنَّا عَمِلُونَ ﴿١٢١﴾ وَانْتَظِرُوا ۚ إِنَّا							
हम भी	और तुम इन्तिज़ार करो	121	काम करते हैं	हम	अपनी जगह	पर	तुम काम किए जाओ
مُنْتَظِرُونَ ﴿١٢٢﴾ وَاللَّهُ غَيْبُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ الْأَمْرُ							
काम	बाज़ग़शत	और उसी की तरफ़	और ज़मीन	आस्मानों	ग़ैब	और अल्लाह के पास	122
كُلُّهُ فَاَعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٢٣﴾							
123	तुम करते हो	उस से जो	गाफ़िल (बेख़बर)	तुम्हारा रब	और नहीं	उस पर	और भरोसा करो
سُوْرَةُ يُوسُفَ ﴿١٢﴾ رُكُوْعَاتُهَا ١٢							
12 रकुआत							
(12) सूरह यूसुफ़							
यूसुफ़ (अ)							
111 आयात							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
الرَّ ۚ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿١﴾ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا							
अरबी	कुरआन	उसे नाज़िल किया	वेशक हम ने	1	रौशन	किताब	आयतें
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢﴾ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا							
इस लिए कि	किस्सा	बहुत अच्छा	तुम पर	बयान करते हैं	हम	2	समझो
أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَذَا الْقُرْآنَ ۚ وَإِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ لَمَنَّ							
अलबत्ता - से	इस से क़व्ल	तू था	और तहकीक़	कुरआन	यह	तुम्हारी तरफ़	हम ने भेजा
الْغُفْلِينَ ﴿٣﴾ إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ							
मैं ने देखा	वेशक मैं	ऐ मेरे बाप	अपने बाप से	यूसुफ़ (अ)	कहा	जब	3
أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَجْدِينَ ﴿٤﴾							
4	सिज्दा करते	अपने लिए	मैं ने उन्हें देखा	और चाँद	और सूरज	सितारे	ग़्यारह (11)

قَالَ يُبْنَىٰ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٥﴾ وَكَذَلِكَ							
तेरे लिए	वह चाल चलेंगे	अपने भाई	पर (से)	अपना ख्वाब	न बयान करना	ऐ मेरे बेटे	उस ने कहा
يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۖ							
अपनी नेमत	और मुकम्मल करेगा	बातों	अन्जाम निकालना	से	और सिखाएगा तुझे	तेरा रब	चुन लेगा तुझे
إِبْرَاهِيمَ وَاسْحَقَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٦﴾ لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ							
यूसुफ़ (अ)	में	वेशक है	6	हिक्मत वाला	इल्म वाला	तेरा रब	वेशक
وَإِخْوَتَهُ آيَّتِ لِلْسَّالِبِينَ ﴿٧﴾ إِذْ قَالُوا لِيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ							
ज़ियादा प्यारा	और उस का भाई	ज़रूर यूसुफ़ (अ)	उन्होंने ने कहा	जब	7	पूछने वालों के लिए	निशानियां
إِلَىٰ أَبِينَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ۚ إِنَّ أَبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٨﴾							
8	सरीह	अलबत्ता ग़लती में	हमारा बाप	वेशक	एक जमाअत	जब कि हम	हम से
إِفْتُلُوا يُوسُفَ أَوْ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ ۖ							
तुम्हारे बाप	मुँह (तबज्जुह)	तुम्हारे लिए	खाली हो जाए	किसी सर ज़मीन	उसे डाल आओ	या	यूसुफ़ (अ)
وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ﴿٩﴾ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا							
न क़त्ल करो	उन से	एक कहने वाला	कहा	9	नेक (जमा)	लोग	उस के बाद
يُوسُفَ وَالْقَوْهُ فِي غَيَبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطُهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ ۖ							
चलता (मुसाफ़िर)	कोई	उठाले उस को	कुआं	अन्धा (गहरा)	में	और उसे डाल आओ	यूसूफ़ (अ)
إِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ﴿١٠﴾ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ							
यूसुफ़ (अ)	पर (वारे में)	तू हमारा भरोसा नहीं करता	क्या हुआ तुझे	ऐ हमारे अब्बा	कहने लगे	10	तुम करने वाले हो (करना ही है)
وَأَنَّا لَهُ لَنَصْحُونَ ﴿١١﴾ أَرْسَلَهُ مَعَنَا غَدًا يَزْنَعُ وَيَلْعَبُ وَانَّا							
और वेशक हम	और खेले कूदे	वह खाए	कल	हमारे साथ	उसे भेज दे	11	अलबत्ता ख़ैर ख्वाह
لَهُ لَحَفِظُونَ ﴿١٢﴾ قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنَّ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ							
और मैं डरता हूँ	उसे	तुम लेजाओ	कि	ग़मगीन करता है	वेशक मुझे	उस ने कहा	12
أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُونَ ﴿١٣﴾ قَالُوا لَئِنْ							
अगर	वह बोले	13	वेख़बर (जमा)	उस से	और तुम	भेड़िया	उसे खाजाए
أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ۚ إِنَّا إِذَا لَخٰسِرُونَ ﴿١٤﴾							
14	ज़ियांकार	उस सूरत में	वेशक हम	एक जमाअत	और हम	भेड़िया	उसे खा जाए

उस ने कहा ऐ मेरे बेटे! अपना सपना अपने भाइयों से बयान न करना कि वह तेरे लिए कोई चाल चलेंगे, वेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। (5)

और तेरा रब उसी तरह तुझे चुन लेगा, और तुझे सिखाएगा बातों का अन्जाम निकालना (ख्वाबों की तावीर) और तुझ पर अपनी नेमत पूरी करदेगा, और याकूब (अ) के घर वालों पर, जैसे उस ने इस से पहले तेरे बाप दादा इब्राहीम (अ) और इसहाक (अ) पर उसे पूरा किया, वेशक तेरा रब इल्म वाला, हिक्मत वाला है। (6)

वेशक यूसुफ (अ) और उस के भाइयों में पूछने वालों के लिए खुली निशानियां हैं। (7)

जब उन्होंने ने कहा ज़रूर यूसुफ (अ) और उस का भाई हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्यारे हैं, जब कि हम एक जमाअत (क़बी) हैं, वेशक हमारे अब्बा सरीह ग़लती में हैं। (8)

यूसुफ (अ) को मार डालो, या उसे किसी सर ज़मीन में डाल आओ कि तुम्हारे बाप की तबज़ुह तुम्हारे लिए खाली (खास) हो जाए और तुम हो जाओ (हो जाना) उस के बाद नेक लोग। (9)

उन में से एक कहने वाले ने कहा, यूसुफ (अ) को क़त्ल न करो, और उसे डाल आओ अन्धे कुआं में कि उसे कोई मुसाफ़िर उठा ले (जाए), अगर तुम्हें करना ही है। (10)

कहने लगे ऐ हमारे अब्बा! तुझे क्या हुआ है? तू यूसुफ (अ) के बारे में हमारा एतबार नहीं करता, और वेशक हम तो उस के ख़ैर खाह हैं। (11)

कल उसे हमारे साथ भेज दे वह (जंगल के फल) खाए और खेले कूदे, और वेशक हम उस के मुहाफिज़ हैं। (12)

उस ने कहा वेशक मुझे यह ग़मगीन (फ़िक्रमन्द) करता है कि तुम उसे ले जाओ और मैं डरता हूँ कि उसे भेड़िया खाजाए, और तुम उस से वेख़बर रहो। (13)

वह बोले अगर उसे भेड़िया खाजाए जब कि हम एक क़बी जमाअत हैं, उस सूरत में वेशक हम जियांकार ठहरे। (14)

फिर जब वह उसे लेगा और उन्होंने ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया कि उसे अन्धे कुआं में डाल दें, और हम ने उस की तरफ़ वहि भेजी कि तू उन्हें उन के इस काम को ज़रूर जताएगा और वह न जानते (तुझे न पहचानते) होंगे। (15)

और अन्धेरा पड़े वह अपने बाप के पास रोते हुए आए। (16)

बोले! ऐ हमारे अब्बा! हम लगे दौड़ने आगे निकलने को, और हम ने यूसुफ़ (अ) को अपने असबाब के पास छोड़ दिया तो उसे भेड़िया खा गया, और तू नहीं हम पर बावर करने वाला अगरचे हम सच्चे हों। (17)

और वह उस की कमीस पर झूटा खून (लगा कर) लाए, उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम्हारे लिए तुम्हारे दिलों ने एक बात बना ली है, पस (सब्र) ही अच्छा है और जो तुम बयान करते हो उस पर अल्लाह (ही) से मदद चाहता हूँ। (18)

और (उधर) एक काफ़िला आया, पस उन्होंने ने अपना पानी भरने वाला भेजा, उस ने अपना डोल डाला, उस ने कहा, आहा खुशी की बात है, यह एक लड़का है और उन्होंने ने उसे माले तिजारात समझ कर छुपा लिया, और अल्लाह खूब जानता है जो वह करते थे। (19)

और उन्होंने ने उसे बेच दिया खोटे दामों गिनती के चन्द दिरहमों में, और वह उस से बेज़ार हो रहे थे। (20)

और मिसर के जिस शाख्स ने उस को खरीदा उस ने कहा अपनी औरत को: इसे इज़ज़त ओ इकराम से रख, शायद कि हमें नफ़ा पहुँचाए, या हम इसे बेटा बना लें, और इस तरह हम ने यूसुफ़ (अ) को मुल्क (मिसर) में जगह दी, और ताकि हम उसे बातों का अनुज़ाम निकालना (खाबों की तावीर) सिखाएं और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (21)

और जब वह (यूसुफ़ अ) अपनी कुव्वत (जवानी) को पहुँच गया हम ने उसे हुक्म और इल्म अता किया, और उसी तरह हम नेकी करने वालों को जज़ा देते हैं। (22)

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَاجْمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غَيْبَتِ الْجُبِّ							
फिर जब	वह उस को ले गए	और उन्होंने ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया	कि	उसे डाल दें	में	अन्धा	कुआं
وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَهُمْ بِأَمْرِهِمْ هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ (١٥)							
और हम ने वहि भेजी	उस की तरफ़	उन्हें ज़रूर जताएगा	उन का काम	उस	और वह	न जानते होंगे	15
وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ (١٦) قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا							
और वह आए	अपने बाप के पास	अन्धेरा पड़े	रोते हुए	16	वह बोले	ऐ हमारे अब्बा	हम दौड़ने गए
نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ وَمَا							
आगे निकलने	और हम ने छोड़ दिया	यूसुफ़ (अ)	पास	अपना असबाब	तो उसे खा गया	भेड़िया	और नहीं
أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ (١٧) وَجَاءُوا عَلَى قَمِيصِهِ							
तू	बावर करने वाला	हम पर	और ख़्वाह हों हम	सच्चे	17	और वह आए (लाए)	उस की कमीस पर
بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبْرٌ							
खून के साथ	झूटा	उस ने कहा	बल्कि	बना ली	तुम्हारे लिए	तुम्हारे दिल	एक बात पस सब्र
جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ (١٨) وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ							
अच्छा	और अल्लाह	मदद चाहता हूँ	पर	जो तुम बयान करते हो	18	और आया	एक काफ़िला
فَارْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوَهُ قَالَ يَبْشُرِي هَذَا غُلْمٌ							
पस उन्होंने ने भेजा	अपना पानी भरने वाला	पस उस ने डाला	अपना डोल	उस ने कहा	आहा - खुशी की बात	यह	एक लड़का
وَأَسْرُوهُ بِضَاعَةً وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ (١٩) وَشَرَوْهُ							
और उसे छुपा लिया	माले तिजारात समझ कर	और अल्लाह	जानने वाला	उसे जो	वह करते थे	19	और उन्होंने ने उसे बेच दिया
بِثَمْنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ (٢٠)							
दाम	खोटे	दिरहम	गिनती के	और वह थे	उस में	से	20
وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ							
और बोला	वह जो, जिस	उसे खरीदा	से	मिसर	अपनी औरत को	उसे इज़ज़त ओ इकराम से रख	उसे
عَسَى أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ							
शायद	कि	हम को नफ़ा पहुँचाए	या	हम उसे बना लें	बेटा	और इस तरह	हम ने जगह दी
فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَاللَّهُ غَالِبٌ							
में	ज़मीन (मुल्क)	और ताकि उसे सिखाएं	से	अनुज़ाम निकालना	बातें	और अल्लाह	ग़ालिब
عَلَى أَمْرِهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (٢١) وَلَمَّا بَلَغَ							
अपने काम पर	और लेकिन	अक्सर	लोग	नहीं जानते	21	और जब	पहुँच गया
أَشَدَّهُ اتِّينَهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ (٢٢)							
अपनी कुव्वत	हम ने उसे अता किया	हुक्म	और इल्म	और उसी तरह	हम जज़ा देते हैं	नेकी करने वाले	22

وَرَأَوْتُهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَقَتِ الْأَبْوَابَ							
और उसे फुसलाया	वह औरत जो	उस	में	उस का घर	अपने आप को रोकने से	और बन्द कर दिए	दरवाज़े
وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ							
और बोली	आजा जल्दी कर	उस ने कहा	अल्लाह की पनाह	वेशक वह	मेरा मालिक	बहुत अच्छा	और रहना सहना
إِنَّهُ لَا يَفْلِحُ الظَّالِمُونَ (23) وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنْ							
वेशक	भलाई नहीं पाते	ज़ालिम (जमा)	23	और वेशक उस औरत ने इरादा किया	उस का	और वह इरादा करते	उस का
رَأَى بُرْهَانَ رَبِّهِ كَذَلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ							
वह देखे	दलील	अपना रब	उसी तरह	हम ने फेर दिया	उस से	बुराई	और बेहयाई
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ (24) وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ							
वेशक वह	से	हमारे बन्दे	बरगुज़ीदा	24	और दानों दौड़े	और दानों	और औरत ने फाड़ दी
فَمِصَّةُ مِنْ دُبُرٍ وَأَلْفَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ قَالَتْ مَا جَزَاءُ							
उस की कमीस	पीछे से	और दोनों को मिला	औरत का खाबन्द	दरवाज़े के पास	वह कहने लगी	क्या सज़ा?	
مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (25)							
जो - जिस	इरादा किया	तेरी बीबी से	बुराई	सिवाए	यह कि	कैद किया जाए	या दर्दनाक अज़ाब
قَالَ هِيَ رَأَوْتَنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَا							
उस ने कहा	उस	मुझे फुसलाया	से	मेरा नफ्स	और गवाही दी	एक गवाह	से
إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ (26)							
अगर	है	उस की कमीस	फटी हुई	आगे से	तो वह सच्ची	और वह	से झूटे
وَأِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ							
और अगर	है	उस की कमीस	फटी हुई	पीछे से	तो वह झूटी	और वह	से
الصَّادِقِينَ (27) فَلَمَّا رَأَى قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ							
सच्चे	27	तो जब	देखा	उस की कमीस	फटी हुई	पीछे से	उस ने कहा
كَيْدُكُمْ إِنَّ كَيْدَكُمْ عَظِيمٌ (28) يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَذَا							
तुम औरतों का फरेब	वेशक	तुम्हारा फरेब	बड़ा	28	यूसुफ (अ)	जाने दे	से - को
وَاسْتَغْفِرِي لِذَنْبِكِ إِنَّكَ كُنتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ (29) وَقَالَ							
और ऐ औरत बख्शिश मांग	अपने गुनाह की	वेशक तू	तू है	से	ख़ताकार (जमा)	29	और कहा
نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ							
औरतें	शहर में	अज़ीज़ की बीबी	फुसला रही है	अपना गुलाम	से		
نَفْسِهِ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا إِنَّا لَنَرِيهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ (30)							
उस का नफ्स	जगह पकड़ गई है	उस की मुहब्बत	वेशक हम उसे देखती है	में	गुमराही	खुली	30

उसे (यूसुफ़ अ को) उस औरत ने फुसलाया वह जिस के घर में थे अपने आप को रोकने (काबू रखने) से, और दरवाज़े बन्द कर दिए और बोली आजा जल्दी कर, उस ने कहा अल्लाह की पनाह! वेशक वह (अज़ीज़ मिस्त्र) मेरा मालिक है, उस ने मेरा रहना सहना बहुत अच्छा (रखा), वेशक ज़ालिम भलाई नहीं पाते। (23)

और वेशक उस औरत ने उस का इरादा किया और वह भी उस का इरादा करते, अगर यह न होता कि वह अपने रब की दलील देख लेते, उस तरह हम ने उस से फेर दी बुराई और बेहयाई, वेशक वह हमारे बरगुज़ीदा बन्दों में से था। (24)

और दोनों दरवाज़े की तरफ दौड़े, और उस औरत ने उस की कमीस फाड़ दी पीछे से, और दोनों को उस का खाबन्द दरवाज़े के पास मिला, वह कहने लगी उस की क्या सज़ा जिस ने तेरी बीबी से बुरा इरादा किया? सिवाए उस के कि वह कैद किया जाए या दर्दनाक अज़ाब दिया जाए। (25)

उस (यूसुफ़ अ) ने कहा उस ने मुझे मेरे नफ्स (की हिफाज़त) से फुसलाया और गवाही दी उस के लोगों में से एक गवाह ने कि अगर उस की कमीस आगे से फटी हुई है तो वह सच्ची है और वह (यूसुफ़ अ) झूटों में से है। (26)

और अगर उस की कमीस पीछे से फटी हुई है तो वह झूटी है और वह (यूसुफ़ अ) सच्चों में से है। (27)

तो जब उस की कमीस पीछे से फटी हुई देखी तो उस ने कहा यह तुम औरतों का फरेब है, वेशक तुम्हारा फरेब बड़ा है। (28)

यूसुफ़ (अ)! उस (ज़िक्र) को जाने दे और ऐ औरत! अपने गुनाह की बख्शिश मांग, वेशक तू ही ख़ताकारों में से है। (29)

और शहर में औरतों ने कहा, अज़ीज़ की बीबी ने फुसलाया है अपने गुलाम को उस के नफ्स (की हिफाज़त) से, उस की मुहब्बत (उस के दिल में) जगह पकड़ गई है, वेशक हम उसे खुली गुमराही में देखती हैं। (30)

फिर जब उस ने उन के फरेब (का ज़िक्र) सुना तो उन्हें दावत भेजी, और उन के लिए एक महफ़िल तैयार की, और (फल काटने को) दी उन में से हर एक को एक एक छुरी, और कहा उन के सामने निकल आ, फिर जब उन्होंने (यूसुफ़ अ) को देखा उन पर उस का रुझ (हूस्न) छागया और उन्होंने (फलों की जगह) अपने हाथ काट लिए और कहने लगी अल्लाह की पनाह! यह बशर नहीं, मगर यह तो बुजुर्ग फरिश्ता है। (31) वह बोली सो यह वही है जिस (के बारे) में तुम ने मुझे मलामत की, और मैं ने उसे उस के नफ्स (की हिफ़ाज़त से) फुसलाया, तो उस ने (अपने आप को) बचा लिया और जो मैं कहती हूँ अगर उस ने ना किया तो अलबत्ता वह कैद कर दिया जाएगा और बेइज़ज़त लोगों में से होगा। (32)

उस (यूसुफ़ अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे कैद उस से ज़ियादा पसन्द है जिस की तरफ़ वह मुझे बुलाती है, अगर तू ने मुझ से उन का फरेब न फेरा तो मैं माइल हो जाऊंगा उन की तरफ़, और जाहिलों में से होंगा। (33)

सो उस के रब ने उस की दुआ कुबूल करली, पस उस से उन का फरेब फेर दिया, वेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (34)

फिर निशानियां देख लेने के बाद उन्हें सूझा कि उसे ज़रूर कैद में डाल दें एक मुद्दत तक। (35)

और उस के साथ दो जवान कैद खाने में दाखिल हुए, उन में से एक ने कहा वेशक मैं (ख़्वाब में) देखता हूँ कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ, और दूसरे ने कहा मैं (ख़्वाब में) देखता हूँ कि अपने सर पर रोटी उठाए हुए हूँ, परिन्दे उस से खा रहे हैं, हमें उस की तावीर बतलाइए, वेशक हम आप को नेकोकारों में से देखते हैं। (36)

उस (यूसुफ़ अ) ने कहा तुम्हारे पास खाना नहीं आएगा जो तुम्हें दिया जाता है, मगर मैं तुम्हें उस की तावीर तुम्हारे पास उस के आने से पहले बतलादूंगा, यह उस (इल्म) से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है, वेशक मैं ने उस कौम का दीन छोड़ दिया जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, और वह (रोज़े) आख़िरत से इन्कार करते हैं। (37)

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَكًا							
एक महफ़िल	उन के लिए	और तैयार की	उन की तरफ़	दावत भेजी	उन का फरेब	उस ने सुना	फिर जब
وَأَتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سَكِينًا وَقَالَتْ أُخْرَجَ عَلَيْهِنَّ فَلَمَّا							
फिर जब	उन पर (उनके सामने)	निकल आ	और कहा	एक एक छुरी	उन में से	हर एक को	और दी
رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَاهُ وَقَطَعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا							
बशर	नहीं यह	अल्लाह की	पनाह	और कहने लगी	अपने हाथ	और उन्होंने ने काट लिए	उन्होंने ने उसे देखा
إِنْ هَذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ (31) قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَنِي فِيهِ							
उस में	तुम ने मलामत की मुझे	जो कि	सो यह वही है	वह बोली	31	बुजुर्ग	फरिश्ता
وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَا أَمَرُهُ							
मैं कहती हूँ उसे	जो	उस ने न किया	और अगर	तो उस ने बचा लिया	उस का नफ्स	से	और मैं ने उसे फुसलाया
لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِّنَ الصُّغَرَىٰ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ							
ज़ियादा पसन्द	कैद	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	32	बेइज़ज़त (जमा)	से	और अलबत्ता होजाएगा
إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ وَلَا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ							
माइल हो जाऊंगा	उन का फरेब	मुझ से	और अगर न फेरा	उस की तरफ़	मुझे बुलाती है	उस से जो	मुझ को
إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ (33) فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ							
उस से	पस फेर दिया	उस का रब	उस की (दुआ)	सो कुबूल कर ली	33	जाहिल (जमा)	से
كَيْدَهُنَّ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (34) ثُمَّ بَدَأَ لَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا رَأَوُا							
उन्होंने जब	बाद	उस के	उन्हें सूझा	फिर	34	जानने वाला	सुनने वाला
الْآيَاتِ لَيَسْجُنَنَّهُ حَتَّىٰ حِينٍ (35) وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيْنِ قَالَ							
कहा	दो जवान	कैद खाना	उस के साथ	और दाखिल हुए	35	एक मुद्दत तक	उसे ज़रूर कैद में डालें
أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرِنِّي أَخَصِرُ خَمْرًا وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرِنِّي أَحْمِلُ فَوْقَ							
ऊपर	उठाए हुए हूँ	मैं देखता हूँ	दूसरा	और कहा	शराब	निचोड़ रहा हूँ	वेशक मैं देखता हूँ
رَأْسِي خُبْرًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ إِنَّا نَرَاكَ مِنْ							
से	वेशक हम तुझे देखते हैं	उस की तावीर	हमें बतलाइए	उस से	परिन्दे	खा रहे हैं	रोटी अपना सर
الْمُحْسِنِينَ (36) قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقْنِيهِ إِلَّا نَبَأُكُمَا							
मैं तुम्हें बतलादूंगा	मगर	जो तुम्हें दिया जाता है	खाना	तुम्हारे पास नहीं आएगा	उस ने कहा	36	नेकोकार (जमा)
بِتَأْوِيلِهِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ذَلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي إِنِّي تَرَكْتُ							
मैं ने छोड़ा	वेशक मैं	मेरा रब	मुझे सिखाया	उस से जो	यह	वह आए तुम्हारे पास	कि कबल उस की तावीर
مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَفَرُونَ (37)							
37	इन्कार करते हैं	वह	आख़िरत से	और वह	अल्लाह पर	जो ईमान नहीं लाते	वह कौम दीन

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ مَا كَانَ						
नहीं है	और याकूब (अ)	और इसहाक (अ)	इब्राहीम (अ)	अपने बाप दादा	दीन	और मैं ने पैरवी की
لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ذَلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا						
हम पर	अल्लाह का फ़ज़ल	से	यह	कोई - किसी शै	अल्लाह का	हम शरीक ठहराएं
وَعَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ (३८) يَصَاحِبِي						
ऐ मेरे साथियो!	38	शुक्र अदा नहीं करते	लोग	अक्सर	और लेकिन	और लोगों पर
السِّجْنِ عَزَابٌ مُتَّفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ (३९)						
39	ज़बरदस्त - ग़ालिब	एक, यकता	या अल्लाह	बेहतर	जुदा जुदा	क्या कई माबूद
مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءُ سَمِيَتْهُمَا أَنْتُمْ						
तुम	तुम ने रख लिए हैं	नाम	मगर	उस के सिवा	तुम पूजते	नहीं
وَأَبَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ إِنْ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ						
अल्लाह का	मगर	हुकम	नहीं	कोई सनद	उस के लिए	अल्लाह ने उतारी
أَمَرَ إِلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ						
और लेकिन	सीधा दीन	यह	सिर्फ उस की	मगर	इबादत करो तुम	कि न
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (४०) يَصَاحِبِي السِّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمَا						
तुम में से एक	जो	कैद खाना	ऐ मेरे साथियो	40	नहीं जानते	अक्सर लोग
فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ						
परिन्दे	पस खाएंगे	तो सूली दिया जाएगा	दूसरा	और जो	शराब	अपना मालिक
مِنْ رَأْسِهِ فَضِي الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِينَ (४१) وَقَالَ						
और कहा	41	तुम पूछते थे	उस में	वह जो	काम - बात	फैसला हो चुका
لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ فَأَنَسَهُ						
पस उस को भुला दिया	अपना मालिक	पास	मेरा ज़िक्र करना	उन दोनों से	बचेगा वह	कि वह
الشَّيْطَانُ ذَكَرَ رَبَّهُ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ (४२)						
42	चन्द बरस	कैद में	तो रहा	अपने मालिक से ज़िक्र करना	शैतान	
وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ						
वह खाती हैं	मोटी ताज़ी	गाएं	सात	मैं देखता हूँ	कि मैं	बादशाह
سَبْعُ عِجَافٍ وَسَبْعُ سُبُلَاتٍ خُضِرٍ وَأُخْرَى يَبْسُتُ يَأْيَاهَا الْمَلَأَ						
ऐ मेरे सरदारो	खुश्क	और दूसरे	सब्ज़	ख़ोशे	और सात	दुबली पतली
أَفْتُونِي فِي رُءْيَايَ إِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُونَ (४३)						
43	तावीर देने वाले	ख़्वाब की	तुम हो	अगर	मेरे ख़्वाब	मैं (की)

और मैं ने अपने बाप दादा इब्राहीम (अ), और इसहाक (अ) और याकूब (अ) के दीन की पैरवी की, हमारा (काम) नहीं कि हम शरीक ठहराएं अल्लाह का किसी शै को, यह हम पर और लोगों पर अल्लाह का फ़ज़ल है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (38)

ऐ मेरे कैद के साथियो! क्या जुदा जुदा कई माबूद बेहतर हैं? या एक अल्लाह? (सब पर) ग़ालिब। (39)

उस के सिवा तुम कुछ नहीं पूजते मगर नाम हैं जो तुम ने रख लिए (तराश लिए) हैं, और तुम्हारे बाप दादा ने, अल्लाह ने उन की कोई सनद नहीं उतारी, हुकम सिर्फ अल्लाह का है, उस ने हुकम दिया कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो, यह सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (40)

ऐ मेरे कैद खाने के साथियो! तुम में से एक अपने मालिक को शराब पिलाएगा, और जो दूसरा है तो सूली दिया जाएगा, पस परिन्दे उस के सर से खाएंगे। उस बात का फैसला हो चुका जिस (के बारे) में तुम पूछते थे। (41)

और यूसुफ़ (अ) ने उन दोनों में से जिस (के मुतअज़िज़) गुमान किया कि वह बचेगा, उस से कहा अपने मालिक के पास मेरा ज़िक्र करना, पस शैतान ने उसे भुला दिया अपने मालिक से उस का ज़िक्र करना, तो वह कैद में चन्द बरस रहा। (42)

और बादशाह ने कहा कि मैं देखता हूँ सात मोटी ताज़ी गाएं, उन्हें सात दुबली पतली गाएं खा रही हैं, और सात सब्ज़ ख़ोशे और दूसरे खुश्क, ऐ सरदारो! मुझे मेरे ख़्वाब की तावीर बतलाओ, अगर तुम ख़्वाब की तावीर देने वाले हो (तावीर देना जानते हो)। (43)

उन्होंने कहा (यह) परेशान
ख्वाब हैं और हम (ऐसे) ख्वाबों
की ताबीर जानने वाले नहीं (नहीं
जानते)। (44)

और वह जो उन दोनों (में) से बचा था
और उसे एक मुद्दत के बाद याद आया,
उस ने कहा मैं तुम्हें उस की ताबीर
बतलाऊंगा, सो मुझे भेज दो। (45)

ऐ यूसुफ़ (अ)! ऐ बड़े सच्चे! हमें
(ख्वाब की ताबीर) बता, सात मोटी
ताज़ी गायों को खा रही हैं सात
दुबली पतली गाएँ, और सात खोशे
सब्ज़ हैं और दूसरे खुश्क, ताकि
मैं लोगों के पास लौट कर जाऊँ
शायद वह आगाह हों। (46)

उस ने कहा तुम सात साल
लगातार खेती बाड़ी करोगे, फिर
जो तुम काटो तो उसे उस के खोशे
में छोड़ दो, मगर थोड़ा जितना जो
तुम उस में से खालो। (47)

फिर उस के बाद आएंगे सात
(7) सख्त साल, खा जाएंगे जो
तुम ने उन के लिए (बचा) रखा,
सिवाए उस के जो तुम थोड़ा
बचाओगे। (48)

फिर उस के बाद एक साल आएगा
उस में लोगों पर बारिश बरसाई
जाएगी और वह उस में (रस)
निचोड़ेंगे। (49)

और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास
ले आओ, पस जब क़ासिद उस के
पास आया तो उस ने कहा अपने
मालिक के पास लौट जाओ और
उस से पूछो उन औरतों का क्या
हाल है? जिनहों ने अपने हाथ काटे
थे, वेशक मेरा रब उन के फ़रेब
से खूब वाक़िफ़ है। (50)

बादशाह ने (उन औरतों से) कहा
तुम्हारा क्या हाले (वाक़ी) था जब
तुम ने यूसुफ़ (अ) को उस के
नफ़्स (की हिफ़ाज़त) से फुसलाया
वह बोली अल्लाह की पनाह! हन
ने उस में कोई बुराई नहीं मालूम
की (नहीं पाई) अज़ीज़े (मिसर) की
औरत बोली अब हकीकत ज़ाहिर
हो गई है, मैं ने (ही) उसे उस के
नफ़्स की हिफ़ाज़त से फुसलाया
और वह वेशक सच्चों में से है
(सच्चा है)। (51)

(यूसुफ़ अ ने कहा) यह (इस लिए
था) ताकि वह जान ले कि मैं ने
पीठ पीछे उस की ख़ियानत नहीं
की, और वेशक अल्लाह चलने नहीं
देता दगाबाज़ों का फ़रेब। (52)

قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعَلَمِينَ ٤٤								
44	जानने वाले	ख्वाब (जमा)	ताबीर देना	हम	और नहीं	ख्वाब	परेशान	उन्होंने ने कहा
وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ								
उस की ताबीर	मैं बतलाऊंगा तुम्हें	एक मुद्दत	बाद	और उसे याद आया	उन दो से	बचा	वह जो	और उस ने कहा
فَارْسَلُون ٤٥ يُوسُفَ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ								
गाएँ	सात	में	हमें बता	ऐ बड़े सच्चे	ऐ यूसुफ़ (अ)	45	सो मुझे भेज दो	
سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعُ عَجَافٍ وَسَبْعِ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ								
और दूसरे	सब्ज़	खोशे	और सात	दुबली पतली	सात	वह खा रही है	मोटी ताज़ी	
يَبْسُتٍ لَّعَلِّي أَرْجِعَ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ٤٦ قَالَ تَزْرَعُونَ								
खेती बाड़ी करोगे	उस ने कहा	46	आगाह हों	शायद वह	लोगों की तरफ़ (पास)	मैं लौटूँ	ताकि	खुश्क
سَبْعَ سِنِينَ دَابًّا فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنْبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا								
थोड़ा जितना	मगर	उस के खोशे में	तो उसे छोड़ दो	तुम काटो	फिर जो	लगातार	साल	सात
مِمَّا تَأْكُلُونَ ٤٧ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعُ شِدَادٍ يَأْكُلْنَ مَا								
जो	खाजाएंगे	सख्त	सात	उस के बाद में	आएंगे	फिर	47	तुम खालो से - जो
قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تَحْصِنُونَ ٤٨ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ								
उस के बाद	आएगा	फिर	48	तुम बचाओगे	से - जो	थोड़ा सा	सिवाए	उन के लिए
عَامٍ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ٤٩ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي								
मेरे पास ले आओ	बादशाह	और कहा	49	वह निचोड़ेंगे	और उस में	लोग	बारिश बरसाई जाएगी	उस में एक साल
بِهِ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَسَلْهُ مَا بَالُ								
क्या हाल?	पस उस से पूछो	अपना मालिक	तरफ़ (पास)	लौट जा	उस ने कहा	क़ासिद	उस के पास आया	पस जब उसे
النِّسْوَةِ الَّتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ٥٠								
50	वाक़िफ़	उन का फ़रेब	मेरा रब	वेशक	अपने हाथ	उन्होंने ने काटे	वह जो	औरतें
قَالَ مَا خَطْبُكَ إِذْ رَأَوْتَنِّي يُوسُفَ عَنْ نَفْسِهِ قُلْنَ حَاشَ								
पनाह	वह बोली	उस का नफ़्स	से	यूसुफ़ (अ)	तुम ने फुसलाया	जब	क्या हाल था तुम्हारा	उस ने कहा
لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ النَّ حَصْحَصَ								
ज़ाहिर हो गई	अब	अज़ीज़	औरत	बोली	कोई बुराई	उस पर (में)	हन ने मालूम की	नहीं अल्लाह की
الْحَقُّ أَنَا رَأَوْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِينَ ٥١ ذَلِكَ لِيَعْلَمَ								
ताकि वह जान ले	यह	51	सच्चे	अलबत्ता - से	और वह वेशक	उस का नफ़्स	से	उसे फुसलाया मैं ने
أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْخَآئِنِينَ ٥٢								
52	दगाबाज़ (जमा)	फ़रेब	नहीं चलने देता	और वेशक अल्लाह	पीठ पीछे	नहीं उस की ख़ियानत की	वेशक मैं	